बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ऐतिहासिक पहल...

शेखावाटी मिशन-100

संस्कृत

कक्षा – 10

कार्यालय : संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू (राज.)
प्रभारी : शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

: missionshekhawati100@gmail.com | 9413361111, 9828336296

टीम शेखावाटी मिशन-100

घनश्यामदत्त जाट
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
झुन्झुनू-सीकर (राज.)

रमेशचन्द्र पूनियां
जिला शिक्षा अधिकारी
चूरू (राज.)

लालचन्द नहलिया
जिला शिक्षा अधिकारी मा.
सीकर (राज.)

अमर सिंह पचार
जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

रिछपाल सिंह मील
अति. जिला परि. समन्वयक
समग्र शिक्षा, सीकर (राज.)

महेन्द्र सिंह बड़सरा
सहायक निदेशक
कार्यालय संयुक्त निदेशक, चूरू

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन-100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

रामचन्द्र सिंह बगड़िया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

नीरज सिहाग
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
झुन्झुनू (राज.)

सांवरमल गहनोलिया
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
चूरू (राज.)

महेश सेवदा
संयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

रामावतार भदाला
सहसंयोजक शेखावाटी मिशन-100
सीकर (राज.)

तकीनीकी सहयोग

राजीव कुमार, निजी सहायक | पवन ढाका, कनिष्ठ सहायक | महेन्द्र सिंह कोक, सहा. प्रशा. अधिकारी | अभिषेक चौधरी, कनिष्ठ सहायक

जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय), सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

माननीय शिक्षा मंत्री की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

हम सभी के लिए यह गौरव का विषय है कि राजस्थान शिक्षा के क्षेत्र में नित नये आयाम छू रहा है। नीति आयोग के नेशनल अचीवमेंट सर्वे (NAS) 2020 में राजस्थान सम्पूर्ण भारत में तीसरे स्थान पर रहा है। इस वर्ष राजस्थान, इंस्पायर अवार्ड मानक योजना में 8027 बाल वैज्ञानिकों के चयन के साथ पूरे देश में प्रथम स्थान पर रहा हैं। इसी परम्परा व सोच को निरन्तर बनाए रखने के प्रयास में इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 का क्रियान्वयन संयुक्त निदेशक परिक्षेत्र चूरु के अधीन जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा सीकर द्वारा किया जा रहा है। अनुभवी तथा ऊर्जावान विषय विशेषज्ञों की लगन व अथक मेहनत से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा जारी संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर विषयवस्तु व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं, जिनको बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन के लिए विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है।

मैं इस मिशन प्रभारी सहित सभी विषयाध्यापकों की कर्मठ टीम को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने अपनी समर्पित कार्यशैली से इस नवाचारी कार्य को अंजाम दिया है। मेरा सभी संस्थाप्रधानों से आग्रह है कि वे सभी विषयाध्यापकों से समन्वय कर इस परीक्षोपयोगी सामग्री को विद्यार्थियों तक पहुँचाना सुनिश्चित करें।

मैं आशा करता हूँ कि आपका प्रयास पूरे प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए एक नवाचार साबित होगा एवं उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित।

3/3/21

गोविन्द सिंह डोटासरा
शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
राजस्थान सरकार, जयपुर

निदेशक महोदय की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरु संभाग, चूरु के नेतृत्व में 'शेखावाटी मिशन–100' के तहत माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक परीक्षा 2021 में शामिल होने वाले विद्यार्थियों हेतु बोर्ड परीक्षा में उपयोगी विषयवस्तु एवं प्रश्नकोश तैयार किया जा रहा है हालांकि यह सत्र कोविड–19 के कारण प्रभावित रहा है इसमें विद्यार्थियों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा।

'शेखावाटी मिशन–100' की टीम ने विद्यार्थियों के हित को देखते हुए संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार नवाचार करने का प्रयास किया। विद्यार्थियों के लिए जो विषयवस्तु व प्रश्नकोश निर्माण किया है आशा करते है कि यह विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा।

प्रतिभाशाली और कर्मठ ऊर्जावान शेखावाटी मिशन–100 की टीम को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

सौरभ स्वामी (IAS)
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

संयुक्त निदेशक की कलम से.....

!! शुभकामना संदेश !!

सम्मानित शिक्षक साथियों,

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा परिणाम में मात्रात्मक एवं गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु एक शैक्षिक नवाचार के रूप में 2017–18 में शेखावाटी मिशन–100 शुरु किया गया था। इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 की जिम्मेदारी संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा चूरु संभाग के नेतृत्व में जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक सीकर को मिली है। इस नवाचारी पहल ने पिछले 03 वर्षो में चूरु संभाग में बोर्ड परीक्षा परिणाम में सफलता के नये आयाम बनाये हैं।

पिछले वर्षो में मिली इस अभूतपूर्व सफलता से अभिप्रेरित होकर इस वर्ष शेखावाटी मिशन–100 का दायरा बढ़ाकर 17 विषयों तक किया गया है। इस वर्ष कक्षा–10 के 07 विषयों (संस्कृत व उर्दू सहित) तथा कक्षा 12 में 10 विषयों, जिनमें अनिवार्य हिन्दी व अंग्रेजी के अलावा विज्ञान संकाय में 04 विषयों (भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व गणित) तथा कला संकाय में 04 विषयों (हिन्दी, साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास व भूगोल) के लिए बोर्ड द्वारा संशोधित पाठ्यक्रम व मॉडल पेपर के आधार पर अध्ययन सामग्री व मॉडल पेपर तैयार किये गये हैं। पाठ्य विषय वस्तु को इस प्रकार तैयार किया गया है कि सभी तरह के बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थी कम समय में भी अधिकतम अंक अर्जित कर सकेंगे।

शेखावाटी मिशन–100 में उन विषय विशेषज्ञों का चयन किया गया है जिनके पिछले वर्षो में अपने विषयों के गुणात्मक रूप से शानदार परीक्षा परिणाम रहे हैं।

मैं इस मिशन को सफल बनाने में सहयोग के लिए संभाग के सभी शिक्षा अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

लालचन्द बलाई
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, चूरू संभाग, चूरू

शेखावाटी मिशन-100

बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्यक्रम सत्र : 2020-21
माध्यमिक परीक्षा - 2021

विषय : संस्कृत

सर्वश्रेष्ठ सफलता सुनिश्चित करने हेतु सर्वश्रेष्ठ संकलन

हरदयाल सिंह फगेड़िया
प्रभारी शेखावाटी मिशन-100
अति. जिला शिक्षा अधिकारी (मा.)
सीकर (राज.)

मनोज कुमार शर्मा
संयोजक संस्कृत
रा.उ.मा.वि., रसीदपुरा (सीकर)
मो. : 9461045256

नेमाराम भाकर
सहसंयोजक संस्कृत
रा.उ.मा.वि., फतेहपुरा (सीकर)

दिनेश कुमार शर्मा
रा.उ.मा.वि., जेवली (सीकर)

सुशीला चौधरी
रा.मा.वि., पुरा बड़ी, सीकर

शैक्षिक प्रकोष्ठ अनुभाग, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक, सीकर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
परीक्षा 2021 के लिए संशोधित पाठ्यक्रम

विषय – संस्कृतम्
विषय कोड – 71, तृतीय भाषा
कक्षा – दशमी

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15 होराः	80	20	100

क्र.सं.	अधिगम क्षेत्र	अंक भार
1.	पठितावबोधनम्	27
2.	अपठितावबोधनम्	10
3.	व्याकरणम्	25
4.	रचनात्मकार्यम्	18
	कुल	80

पुस्तक का नाम – स्पन्दना

ईकाई संख्या	अध्याय एवं विषयवस्तु	अंक–भार
1. पठितावबोधनम्		27
	तृतीय पाठः – स्वराष्ट्र गौरवम्	
	चतुर्थः पाठः – जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये	
	षष्ठः पाठः – महाराणा प्रतापः	
	अष्टमः पाठः – कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः	
	दशमः पाठः – सुभाषित–रत्नानि	
	एकादशः पाठः – स्वदेशं कथं रक्षेयम्	
	द्वादशः पाठः – मरु सौन्दर्यम्	
	त्रयोदश पाठः – महाराजा सूरजमल्लः विजयते	
	पंचदशः पाठः – आचार्योपदेशः	
2. अपठितावबोधनम् –		10
	(i) शीर्षकप्रदानम्	01
	(ii) संस्कृत–माध्यमेन प्रश्नोत्तराणि	05
	(iii) अनुच्छेदाधारितं भाषिककार्यम्	04
	'भाषिककार्यम्' इत्यनेन अभिप्रेतम् अस्ति–	
	(i) वाक्येषु कर्तृक्रियापदचयनम्	
	(ii) कर्तृ–क्रियान्वितिः	
	(iii) विशेषण–विशेष्यान्वितिः	
3. व्याकरणम्		
(i) सन्धिः	(इ) विसर्गसंधि – विसर्गस्य उत्वं रुत्वं, लोपः, विसर्गस्थाने श्, ष्, स्	04
(ii) समासः	अव्ययीभावः – वाक्येषु समस्तपदानां विग्रहः, विग्रहपदानां च समासः।	03
(iii) कारकानि	उपपद – विभक्तिनां प्रयोगाः तेषां सामान्य नियमानां परिचयश्च।	03
(iv) प्रत्ययाः	(अ) कृदन्ताः – शतृ, शानच्	
	(ब) तद्धिता – मतुप्, इन्, ठक्	04
(v) अव्ययपदानि	पाठ्यपुस्तके कथायाम्, अनुच्छेदे, संवादे, पद्ये वा अव्ययानां प्रयोगः अपि, इति, इव, उच्चै, कदा, कुतः, नूनम्, यत्, अत्र, कुत्र, इदानीम्, : सम्प्रति, अधुना, बहि	03
(vi) वाच्य परिवर्तनम्	लट् लकारे	03
(vii) समयलेखनम्	(घटिका–चित्र साहाय्येन अंकानां स्थानै शब्दैः)	02
(viii) अशुद्धिसंशोधनम्	वाक्येषु लिंग–विभक्ति–वचन–पुरुष–लकाराधारितम् अशुद्धिसंशोधनम।	03
4. रचनात्मक कार्यम्		18
	(i) कमपि विषयं स्वीकृत्य प्रार्थनापत्रं / आत्मीयजनान् प्रति अनौपचारिकं पत्रम्	06
	(ii) संकेताधारित संवादलेखनम्	06
	(iii) अनुवादकार्यम्–हिन्दीभाषायाः दशवाक्येषु षड् वाक्यानां संस्कृतभाषयाः अनुवादः	06

शेखावाटी मिशन–100

पुस्तक का नाम – स्पन्दना

ईकाई संख्या	अध्याय संख्या	शीर्षक
1. पठितावबोधनम्	प्रथम पाठः	जय सुर भारति
द्वितीया पाठः	संघे शक्तिः	
पंचम पाठः	वाक्केलिः	
सप्तमः पाठः	लोकहितं मम करणीयम्	
नवम पाठः	भारत वैभवम्	
चतुर्दशः	यो यद्वपतिबीजं हि लभते तादृशं फलम्	
2. अपठितावबोधनम्		(iv) संज्ञा स्थाने सर्वनाम प्रयोगः अथवा सर्वनाथ स्थाने संज्ञा प्रयोगः
		(v) पर्यायपदं विलोम पदं वा अनुसृत्य अनुच्छेद तत्समानस्य अन्वेषणम्
3. व्याकरणम्	(i) स्वर सन्धि	वृद्धि, यण्, अयादि, पूर्वरूपम्, पररूपम्
	(ii) व्यंजन सन्धिः	परसवर्ण, मोऽनुस्वारः जश्त्वम् (वर्णानाम प्रथमाक्षरराणाम् स्थाने तृतीय वर्ण परिवर्तनम्)
	(iii) समासः	कर्मधारय, द्वन्द्व
	(iv) प्रत्ययाः	अ– कृदन्ताः – तव्यत् अनीयर्
		ब– तद्धिता – त्व्, तल्
		स– स्त्री प्रत्ययौ टाप ङीप्
	(v) अव्ययपदानि	पुरा मा इतस्ततः यदा, कदा तथा, यथा, विना, सहसा, श्वः, वृथा, कदापि, शनैः किम् यावत्, तावत्
4. रचनात्मक कार्यम्		(iv) चित्राधारितं वर्णनम्
		(v) कथाक्रमस्य संयोजनम् (सुपरिचित)
		कथानाम् क्रम रहितानाम
		षड्वाक्यानाम् क्रमपूर्वकं संयोजनम्

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न – निम्नांकितेषु प्रश्नेषु उचितविकल्पं चित्वा कोष्ठके लिखत–

व्याकरणाधारित–वस्तुनिष्ठप्रश्नानि

संधि

1. 'हरिः+शेते' इत्यस्य सुसंधियुक्तपदमस्ति –
(अ) हरिःशेते (ब) हरिश्शेते (स) उभौ (द) उभावेव न

2. 'नृपषष्ठः' इत्यस्य विच्छेदः भवति–
(अ) नृपः+षष्ठः (ब) नृपष्+षष्ठः (स) नृपष+षष्ठः (द) नृप+षष्ठः

3. कस्मिन् विकल्पे सत्वविसर्गसंधिः अस्ति–
(अ) निस्सन्देहः (ब) प्रातर्गच्छति (स) कोऽपि (द) एष गच्छति

4. कस्मिन् विकल्पे सुविच्छेदकार्य नं कृतम्–
(अ) धनुष्टङ्कारः = धनुः+टङ्कारः (ब) रामश्च = रामः+च
(स) विष्णुस्त्राता = विष्णुः+त्राता (द) निश्छलः = निश्+छलः

5. 'रामः+अयम्' = रामोऽयम् इत्यत्र संधिः अस्ति–
(अ) सत्वविसर्गः (ब) उत्वविसर्गः (स) रुत्वविसर्गः (द) विसर्गलोपः

6. निम्नाड़्कितेषु उत्वविसर्गसन्धेः उदाहरणमस्ति–
(अ) मृत्योर्मा (ब) बाला अत्र (स) नमो नमः (द) मुनिरिति

7. 'बालः+याति' इत्यस्य सुसंधि युक्तपदमस्ति –
(अ) बालर्याति (ब) बालोयाति (स) बाल याति (द) बालस्याति

8. कस्मिन् विकल्पे सुसंधिकार्य नाभवत्–
(अ) एषः+इच्छति = एषो इच्छति (ब) भानुः + असौ = भानुरसौ
(स) क्षीणः + भवति = क्षीणो भवति (द) पुनः+ रमते = पुना रमते

9. 'शम्भुः+राजते' इत्यस्य सुसंधियुक्तपदमस्ति–
(अ) शम्भुराजते (ब) शम्भू राजते (स) शम्भुर्राजते (द) शम्भुःराजते

10. 'सः+आगच्छति' इत्यत्र संधिरस्ति –
(अ) सागच्छति (ब) स आगच्छति (स) सो आगच्छति (द) सः आगच्छति

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
उत्तर	स	अ	अ	द	ब	स	ब	अ	ब	ब

(समास)

1. 'अधिहरि' इत्यस्य सुविग्रहः अस्ति –
(अ) हरौ इति (ब) हरेः इति (स) हरिणा समीपम् (द) हरेः समीपम्

2. 'कृष्णस्य समीपम्' इत्यस्य समस्तपदम् भविष्यति–
(अ) अधिकृष्णम् (ब) उपकृष्णम् (स) अनुकृष्णम् (द) एषु कोऽपि न

3. कस्मिन् विकल्पे सुविग्रहकार्यं न कृतम्–
(अ) अनुरूपम् = रूपस्य योग्यम् (ब) प्रतिदिनम् = दिनं दिनं प्रति
(स) निर्मक्षिकम् = मक्षिकाणाम् अभावः (द) उपगङ्गम् = गङ्गायाः पश्चात्

4. 'अधिहरि' इत्यत्र 'अधि' अव्ययस्य प्रयोगः अभवत्–
(अ) सप्तमी–विभक्तर्थे (ब) समीपार्थे (स) योग्यतार्थे (द) वीप्सार्थे

5. निम्नांकितेषु अभावार्थे प्रयुक्तमानं समस्तपदम् अस्ति–
(अ) यथाशक्ति (ब) प्रतिवर्षम् (स) निश्चिन्तम् (द) उपहरि

6. 'यथाशक्ति' इत्यस्य सुविग्रहः अस्ति–
(अ) शक्ति अनतिक्रम्य (ब) शक्तिम् अनतिक्रम्य
(स) शक्तिना अनतिक्रम्य (द) शक्तौ अनतिक्रम्य

7. 'उपनगरम्' इत्यस्य सुविग्रह अस्ति –
(अ) नगरे इति (ब) नगरस्य योग्यम् (स) नगरस्य पश्चात् (द) नगरस्य समीपम्

शेखावाटी मिशन–100

8. 'गतिम् अनतिक्रम्य' इत्यस्य सुसमस्तपदं भविष्यति–

(अ) उपगति (ब) यथागति (स) अनुगति (द) प्रतिगति

9. 'अनुरथम्' इत्यस्य सुविग्रहः अस्ति–

(अ) रथस्य योग्यम् (ब) रथस्य प्रति (स) रथस्य पश्चात् (द) एषु कोऽपिन

10. 'अव्ययीभावसमासस्य उदाहरणमस्ति–

(अ) पीताम्बरः (ब) नीलकमलम् (स) यथाशक्ति (द) त्रिलोकी

11. 'यथासङ्ख्यम्' इत्यस्मिन् पदे समास अस्ति–

(अ) तत्पुरूषः (ब) अव्ययीभावः (स) द्वन्द्व (द) कर्मधारयः

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
उत्तर	अ	ब	द	अ	स	ब	द	ब	स	स	ब

कारकम्

1. 'अभितः/परितः' योगे विभक्तिः भवति –

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) तृतीया (द) चतुर्थी

2. 'इति' शब्दस्य योगे .... विभक्तिः भवति–

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) तृतीया (द) चतुर्थी

3. 'वयं तं .... इति नाम्ना जानीमः।' रिक्तस्थानपूर्तये समुचितपदमस्ति –

(अ) जयन्तः (ब) जयन्तम् (स) जयन्तेन (द) जयन्तस्य

4. 'राजपुरुषः .... अनु धावति।' रिक्तस्थानपूर्तये समुचितपदमस्ति –

(अ) चौरस्य (ब) चौरम् (स) चौरेण (द) चौराय

5. कस्मिन् विकल्पे कारकस्य/विभक्तेः सुष्ठुप्रयोगः कृतः?

(अ) लोकस्य उपर्युपरि सूर्यः अस्ति। (ब) सुरेशः शय्यायाम् अधिशेते।

(स) नृपः सिंहासनम् अध्यास्ते। (द) सः माणवकेन पन्थानं पृच्छति।

6. कस्मिन् विकल्पे कारकस्य/विभक्तेः सुष्ठुप्रयोगः न कृतः?

(अ) नदी क्रोशं कुटिला अस्ति। (ब) गोपालः गां पयः दोग्धि।

(स) जनकः पुत्रेण सह गच्छति। (द) साधुः पादात् खञ्जः अस्ति।

7. निम्नांकितेषु असमुमेलित विकल्पमस्ति –

शब्द विभक्ति शब्द विभक्ति

(अ) वषट् – चतुर्थी (ब) उपरि – द्वितीया

(स) ऋते – पंचमी (द) समम् – तृतीया

8. निम्नांकितेषु अशुद्धवाक्यमस्ति–

(अ) पिता पुत्राय क्रुध्यति। (ब) सूरदासः नेत्राभ्याम् अन्धः अस्ति।

(स) श्रेष्ठी शिरसा खल्वाटः विघते। (द) गणेशः सुखं जीवति।

9. 'सह' शब्दस्य योगे विभक्तिः भवति –

(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) षष्ठी

10. सम्बोधने विभक्तिः भवति –

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) तृतीया (द) चतुर्थी

11. संस्कृत व्याकरणे कारकाणां संख्या अस्ति–

(अ) षट् (ब) सप्त (स) अष्ट (द) नव

12. 'अङ्गविकारे' विभक्तिः भवति–

(अ) प्रथमा (ब) द्वितीया (स) तृतीया (द) चतुर्थी

13. अधस्तनेषु चतुर्थी विभक्तेः कारणम् अस्ति –

(अ) नमः (ब) सह (स) अभितः (द) प्रति

14. अधस्तनेषु पंचमी विभक्तेः कारणम् अस्ति–

(अ) नमः (ब) अनन्तरम् (स) अधोऽधः (द) खल्वाटः

शेखावाटी मिशन–100

15. अपादाने विभक्तिः भवति –
(अ) द्वितीया (ब) तृतीया (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

16. रक्षार्थकधातूनां योगे विभक्तिः भवति–
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

17. यस्मिन् स्नेहः क्रियते तस्मिन् .... विभक्तिः भवति–
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पञ्चमी (द) सप्तमी

18. 'कृते' शब्दस्य योगे विभक्तिः भवति–
(अ) चतुर्थी (ब) षष्ठी (स) द्वितीया (द) सप्तमी

19. 'तरप्/ईयसुन्' प्रत्ययस्य योगे यस्मात् विशेषता प्रदर्श्यते तस्मिन् .... विभक्तिः भवति –
(अ) तृतीया (ब) चतुर्थी (स) पंचमी (द) सप्तमी

20. यस्मात् नियमपूर्वक विद्या ग्रह्यते तस्य शिक्षकादिजनस्य .... भवति –
(अ) सम्प्रदानसंज्ञा (ब) अपादानसंज्ञा (स) करणसंज्ञा (द) अधिकरणसंज्ञा

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
उत्तर	ब	अ	अ	ब	स	द	ब	द	अ	अ	अ	स	अ	ब	स	स	द	ब	स	ब

प्रत्यय

1. 'पठन्' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

2. 'वर्तमानः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

3. 'गोमान्' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) ठक्

4. 'माली' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

5. कस्मिन् विकल्पे 'शतृँ' प्रत्ययः अस्ति–
(अ) धनवान्, धनवती, धनवत् (ब) सन्, सती, सत्
(स) कुर्वाणः, कुर्वाणा, कुर्वाणम् (द) योगी, योगिनी, योगिन्

6. कस्मिन् विकल्पे 'मतुँप्' प्रत्ययः प्रयुक्तः–
(अ) श्रीमान्, श्रीमती, श्रीमत् (ब) लभमानः, लभमाना, लभमानम्
(स) ज्ञानी, ज्ञानिनी, ज्ञानिन (द) सामाजिकः, सामाजिकी, सामाजिकम्

7. कस्मिन् विकल्पे 'ठन्' प्रत्ययः प्रयुक्तः?
(अ) धनिकः, धनिका, धनिकम् (ब) दुःखी, दुःखिनी, दुःखिन्
(स) शारीरिकः, शारीरिकी, शारीरिकम् (द) लिखन्, लिखन्ती, लिखत्

8. कस्मिन् विकल्पे 'ठक्' प्रत्ययः प्रयुक्तः?
(अ) सेवमानः, सेवमाना, सेवमानम् (ब) गणयन्, गणयन्त्री, गणयत्
(स) व्यावहारिकः, व्यावहारिकी, व्यावहारिकम् (द) वर्णिकः, वर्णिका, वर्णिकम्

9. वर्तमानकालार्थे आत्मनेपदिधातुभ्यः .... प्रत्ययः भवति।
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

10. वर्तमानकालार्थे परस्मैपदिधातुभ्यः .... प्रत्ययः भवति –
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

11. 'तदस्य अस्ति' अथवा 'अस्मिन्' इत्यर्थे तद्धितस्य .... प्रत्ययः भवति –
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) इन्

12. अकारान्ताद् प्रातिपदिकात् 'तदस्य अस्ति' अथवा 'अस्मिन्' इत्यर्थे .... प्रत्ययों भवतः –
(अ) इनिठँनौ (ब) शतृँशानचौ (स) मतुप्वतुपौ (द) एषु कोऽपि न

13. 'तडित्वत्' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–
(अ) शतृँ (ब) शानच् (स) मतुँप् (द) ठन्

शेखावाटी मिशन–100

14. 'वर्मिकः' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–

(अ) ठन् (ब) ठक् (स) मतुँप् (द) शानच्

15. 'वर्णिन्' इत्यस्मिन् पदे प्रत्ययः अस्ति–

(अ) ठन् (ब) इन् (स) शानच् (द) शतृँ

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
उतर	अ	ब	स	द	ब	अ	अ	स	ब	अ	स	अ	स	अ	ब

अव्यय

1–10 रिक्तस्थानपूर्तये समुचिताव्ययपदं चिनुत –

1. अहम् .... ग्रामं गमिष्यामि।

(अ) इति (ब) इव (स) अपि (द) बहिः

2. वयं त जयन्तः .... नाम्ना जानीमः।

(अ) इति (ब) इव (स) अपि (द) बहिः

3. पश्यामि .... पिनाकिनम्।

(अ) इति (ब) इव (स) उच्चैः (द) बहिः

4. सः गायकः .... गायति।

(अ) यत् (ब) इति (स) उच्चैः (द) इव

5. त्वं गृहं .... गमिष्यसि?

(अ) कदा (ब) उदानीम् (स) सम्प्रति (द) अत्र

6. .... भवान्?

(अ) कदा (ब) कुतः (स) बहिः (द) नूनम्

7. '.................... सः सत्यं वदति।

(अ) नूनम् (ब) इति (स) कुत्र (द) इव

8. 'रामोऽवदत् .... सः सर्वम् अपश्यत्।'

(अ) कदा (ब) कुत्र (स) यत् (द) नूनम्

9. 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति को .... दोषः।'

(अ) अत्र (ब) कुत्र (स) तत्र (द) इदानीम्

10. 'सः जयपुरे पठति, ...एव निवसति।'

(अ) सम्प्रति (ब) कुत्र (स) तत्र (द) अधुना

11. सः .... निवसति?

(अ) अत्र (ब) तत्र (स) कुत्र (द) यत्

12. बालकाः .... क्रीडन्ति।

(अ) अधुना (ब) इदानीम् (स) सम्प्रति (द) सर्वे

13. ग्रामाद् .... एकं रम्यम् उद्यानम् अस्ति।

(अ) अधुना (ब) बहिः (स) उच्चै (द) कदा

14. 'कदा' अव्ययस्य अर्थः भवति–

(अ) कस्मिन् काले (ब) कस्मात् स्थानात् (स) यस्मिन् काले (द) तस्मिन् काले

15. निम्नांकितेषु समानार्थकाव्ययपदं नास्ति–

(अ) सम्प्रति (ब) अधुना (स) इदानीम् (द) कुतः

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
उतर	स	अ	ब	स	अ	स	द	ब	अ	द	स	द	ब	अ	द

शेखावाटी मिशन–100

वाच्य परिवर्तनम्

1. 'सा कथां श्रृणोति' इत्यस्य वाच्य–परिवर्तनं कुरुत–
(अ) तेन कथा श्रृण्यते (ब) तया कथा श्रूयते (स) तेन कथा श्रूयते (द) तया कथा श्रृण्यते
2. 'पुष्पाणी विकसन्ति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(अ) पुष्पाणि विकस्यन्ते (ब) पुष्पाणि विकस्यते (स) पुष्पैः विकस्यन्ते (द) पुष्पैः विकस्यते
3. 'मया हस्यते' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(अ) सः हसति (ब) अहं हसति (स) त्वं हससि (द) अहं हसामि
4. 'भवान् वदति' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(अ) भवानेन वदति (ब) भवानेन उद्यते (स) भवता वदति (द) भवता उद्यते
5. 'शिशुः स्वपिति' इत्यस्य वाच्य–परिवर्तनं कुरुत–
(अ) शिशुना स्वप्पते (ब) शिशुना सुप्यते (स) शिशुना स्वपिति (द) शिशुः सुप्यते
6. 'बालकाभिः नृत्यते' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(अ) बालिकाभिः नृत्यन्ति (ब) बालिकाः नृत्यति (स) बालिकाभिः नृत्यति (द) बालिकाः नृत्यन्ति
7. 'तेन किं क्रियते?' इत्यस्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–
(अ) सः किं करोति? (ब) त्वं किं करोषि? (स) सा किं करोति? (द) अहं किं करोमि?

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7
उतर	ब	द	द	द	ब	द	अ

अशुद्धिसंशोधनम्

1. निम्नांकितेषु शुद्धं वाक्यमस्ति–
(अ) गुरोः नमः (ब) गुरौ नमः (स) गुरवे नमः (द) गुरूं नमः
2. निम्नांकितेषु अशुद्धं वाक्यमस्ति–
(अ) तिस्रः बालिकाः (ब) चत्वारि फलानि (स) द्वे बालके (द) अष्ट कपोताः
3. निम्नांकितेषु अशुद्धं वाक्यमस्ति–
(अ) अयं मोहनस्य अश्वः (ब) इयं रमायाः अजा (स) इमानि कृष्णस्य वस्त्राणि (द) अयं मम चटका
4. निम्नांकितेषु शुद्धवाक्यमस्ति–
(अ) विष्णुना वषट् (ब) अग्नेः स्वाहा (स) बालकेभ्यः स्वस्ति (द) पितृभिः स्वधा
5. निम्नांकितेषु अशुद्धं वाक्यमस्ति–
(अ) शिरसा खल्वाटः (ब) कर्णाभ्यां बधिरः (स) अक्षिणा काणः (द) पृष्ठेन कुब्जः
6. निम्नांकितेषु शुद्धवाक्यमस्ति–
(अ) ग्रामस्य अभितः नद्यौ वहतः (ब) नगरं निकषा एकः रम्यः उद्यानः अस्ति
(स) लोकस्य उपर्युपरि हरिः (द) कृष्णं सर्वतः गोपाः सन्ति
7. निम्नांकितेषु अशुद्धवाक्यमस्ति–
(अ) सीता वनम् अनुवसति (ब) सीता वनम् आवसति (स) सीता वने उपवसति (द) सीता वने अधिवसति

प्र.सं.	1	2	3	4	5	6	7
उतर	स	स	द	स	स	द	द

संस्कृत अनुवाद

1. 'पिता पुत्र पर क्रोध करता है।' इत्यस्य अनुवादः–
(अ) पिता पुत्रं क्रुध्यति (ब) पिता पुत्राय क्रुध्यति (स) पिता पुत्रेण क्रुध्यति (द) पिता पुत्रे क्रुध्यति।
2. 'चार बालिकाएँ चार फल खाती हैं।' इत्यस्य अनुवादः–
(अ) चत्वारः बालिकाः चत्वारि फलानि खादन्ति। (ब) चतस्रः बालिकाः चत्वारः फलानि खादन्ति।
(स) चतस्र बालिकाः चत्वारि फलानि खादन्ति। (द) चत्वारः बालिकाः चतस्रः फलानि खादन्ति।
3. 'उसका नाम गोपाल है।' इत्यस्य अनुवाद –
(अ) तस्य नामः गोपालः (ब) तस्य नाम गोपालः (स) तस्याः नाम गोपालः (द) एषु कोऽपि न

शेखावाटी मिशन–100

4. 'छात्र गुरु से पढ़ता है।' इत्यस्य अनुवाद –

(अ) छात्रः गुरु पठति (ब) छात्रः गुरूणा पठति (स) छात्रः गुरोः पठति (द) छात्रः गुरौ पठति

5. 'गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं।' इत्यस्य संस्कृतेन अनुवादं कुरूत–

(अ) गणेशाय मोदकं रोचते (ब) गणेशाय मोदकानि रोचन्ते

(स) गणेशाय मोदकं रोचन्ते (द) गणेशाय मोदकानि रोचते

प्र.सं.	1	2	3	4	5
उतर	ब	स	ब	स	ब

पाठ्यपुस्तकाधारित–वस्तुनिष्ठप्रश्नानि

1. बालकस्य किं नाम आसीत? (जृम्भस्व सिंहः / दन्तांस्ते गणयिष्ये आधृत्य)

(अ) रिपुदमनः (ब) सर्वदमनः (स) अरिदमनः (द) दुष्टदमनः (ब)

2. जातकर्मसमये कः बालकाय अपराजिता नामौषधिं ददाति?

(अ) दुष्यन्तः (ब) मारीचः (स) शकुन्तला (द) मार्कण्डेयः (ब)

3. बालकः कस्य वंशस्य आसीत्?

(अ) पुरूवंशस्य (ब) सूर्यवंशस्य (स) मेद्यवंशस्य (द) चन्द्रवंशस्य (अ)

4. बालकस्य पितुः किं नाम आसीत्?

(अ) रामः (ब) दुष्यन्तः (स) प्रह्लादः (द) नचिकेतः (ब)

5. बालकः सर्वदमनः कस्य सकाशं गन्तुम् इच्छति?

(अ) पितुः सकाशं (ब) भ्रातुः सकाशं (स) मातुः सकाशं (द) सख्युः सकाशं (स)

6. बालकः सिहंशिशोः किम् गणयितुम् इच्छति

(अ) केशान् (ब) नखान् (स) दन्तान् (द) पादान् (स)

7. तापसी कस्य क्रीडनकम् आनेतुम् गच्छति?

(अ) मारीचस्य (ब) सर्वदमनस्य (स) मार्कण्डेयस्य (द) दुष्यन्तस्य (स)

8. 'सम्पूर्णमपि मे मनोरथं नाभिनन्दामि' इति कः कथयति?

(अ) मोरध्वजः (ब) गोपीनाथः (स) दुष्यन्तः (द) दुलीचन्दः (स)

9. ततस्तं को भूत्वा दशति?

(अ) बिडालः (ब) सर्पः (स) मधुमक्षिका (द) कर्कः (ब)

10. एषः भद्रमयूरः कस्मै रोचते?

(अ) वासवदतायै (ब) इन्द्राय (स) दुष्यन्ताय (द) सर्वदमनाय (द)

11. भगवता मारिचेन किम् नामौषधिः दत्ता?

(अ) अशोकारिष्टः (ब) कुनेनः (स) अश्वगन्धा (द) अपराजिता (द)

12. सर्वदमनः इति नामकरणं केन कृतम्?

(अ) महर्षिणा मारिचेन (ब) महर्षिणा वेदव्यासेन (स) महर्षिणा वशिष्ठेन (द) राज्ञा दुष्यन्तेन (अ)

13. प्रतापाय कः स्वकीयं सम्पूर्णं धनं दत्तवान्?

(अ) हकीम खां सुरि (ब) भामाशाहः (स) उदयसिंहः (द) चेटकः (ब)

14. प्रतापस्य जन्म कदा अभवत्?

(अ) 1540 तमे वर्षे ईस्वी (ब) 1957 तमे वर्षे ईस्वी (स) 1357 तमे वर्षे ईस्वी (द) 1637 तमे वर्षे ईस्वी (अ)

15. प्रतापस्य शासनकाले कः मुगलशासकः आसीत?

(अ) बाबरः (ब) अकबरः (स) जहागीरः (द) तेमुरः (ब)

16. प्रतापः कुत्र बहुशौर्यं प्रदर्शितवान्?

(अ) पानीपतयुद्धे (ब) खानवायुद्धे (स) हल्दीघाटीयुद्धे (द) चन्देरीयुद्धे (स)

17. प्रतापः किम् स्थानं स्वराजधानीम् अकरोत्?

(अ) चावण्डः (ब) वैराठः (स) मैसूरः (द) जयपुरः (अ)

18. महाराणा प्रतापस्य वंशः आसीत?

(अ) पुण्यवंशः (ब) सिसोदिया (स) गुप्तवंशः (द) मौर्यवंशः (ब)

शेखावाटी मिशन–100

19. प्रतापस्य पितुः नाम किम् आसीत्?
(अ) सग्राम सिंहः (ब) उदय सिंहः (स) राज सिंहः (द) चन्द्र सिंहः (ब)

20. मुगलैः सह प्रवृत्तं प्रतापस्य मुख्यं युद्धमासीत्?
(अ) चितौड़युद्धम् (ब) उदयपुरयुद्धम् (स) हल्दीघाटीयुद्धम् (द) चावण्डयुद्धम् (स)

21. 'मेवाड़' राज्यम् उद्भवभूमिरस्ति?
(अ) उत्सर्गपरम्परायाः (ब) शूराणां शौर्य्यस्य (स) प्रतापस्य (द) वीराणाम् (अ)

22. प्रतापस्य राज्यकाले मुख्ययुद्धं कुत्र अभवत्?
(अ) हल्दीघाटीस्थाने (ब) खानवास्थाने (स) कुरूक्षेत्रे (द) पानीपतस्थाने (अ)

23. प्रतापस्य राज्याभिषेकः कुत्र अभवत्?
(अ) गोगुन्दाग्रामे (ब) चावण्डग्रामे (स) द्वारिकाग्रामे (द) कुरूक्षेत्रग्रामे (अ)

24. महाराणा प्रतापः केन महासैन्यं रचयामास?
(अ) उदयसिंहप्रदत्तधनेन (ब) हकीमखांसुरीप्रदत्तधनेन (स) अमरसिंहप्रदत्तधनेन (द) भामाशाहप्रदत्तधनेन (द)

25. स्वामी केशवानन्दस्य जन्म कदा अभवत्?
(अ) 1938 तमे वर्षे ईस्वी (ब) 1338 तमे वर्षे ईस्वी (स) 1783 तमे वर्षे ईस्वी (द) 1883 तमे वर्षे ईस्वी (द)

26. स्वामी केशवानन्दस्य जन्म कुत्र अभवत्?
(अ) सुजानपुराग्रामे (ब) माण्डोलीग्रामे (स) मंगलुणाग्रामे (द) मोरडुंगाग्रामे (स)

27. स्वामी केशवानन्दस्य पितुः नाम किम् आसीत?
(अ) भाखरसी ढाका (ब) ठाकुरसी ढाका (स) नारायणः (द) भंवर सिंहः (ब)

28. बाल्यावस्थायां स्वामी केशवानन्दस्य नामासीत्?
(अ) बिरसा (ब) बनवारी (स) वीरू (द) बीरमा (द)

29. बाल्यकाले स्वामी केशवानन्दः आसीत्?
(अ) पशुचारकः (ब) चाय विक्रेता (स) राजसेवकः (द) राजकः (अ)

30. यदा स्वामी केशवानन्दस्य शिक्षारम्भः जातः तदा सः आसीत्?
(अ) पञ्चवर्षीयः (ब) दशवर्षीयः (स) दाद्वशवर्षीयः (द) षोडशवर्षीयः (द)

31. स्वामीकेशवानन्दः आसीत्?
(अ) स्वतन्त्रता–सेनानी (ब) शिक्षाविद् (स) समाजसुधारकः (द) एतन्सर्वमपि (स)

32. केशवानन्देन संस्कृत पाठशाला कुत्र स्थापिता?
(अ) मगलुणाग्रामे (ब) मोरडुंगाग्रामे (स) अमरपुरग्रामे (द) अबोहरग्रामे (द)

33. केशवानन्दः केन विरूदेन भूषितः?
(अ) राजपुरूषः (ब) शिक्षा–सन्तः (स) संन्यासी (द) साधुसन्तः (ब)

34. संस्कृतमध्येतु कस्य शिष्यत्वं 'बीरमा' अङ्गीकृतवान्?
(अ) गुरूनानकदेवस्य (ब) स्वामिकुशलदासस्य (स) बन्दाबहादुरस्य (द) स्वामिबिरजानन्दस्य (ब)

35. स्वामिकेशवानन्दः संसदः सदस्यः अवर्तत?
(अ) एकवारं, राज्यसभायाः (ब) त्रिवारं, लोकसभायाः (स) द्विवारं राज्यसभायाः (द) एकवारं, लोकसभायाः (स)

36. 'केशवानन्द' इति नामकरणं केन, कुत्र च कृतम्?
(अ) सरछोटुरामेण, पञ्जाबे (ब) एकेन साधुना, कुम्भमेलायाम्
(स) राजामहेन्द्रप्रतापेन, वृन्दावने (द) मातापितृभ्याम् मंगलुणाग्रामे (ब)

37. भामाशाहः आसीत्–
(अ) सर्वदारः (ब) महाराजः (स) मेवाडमन्त्री (द) प्रतापस्य भ्राता (स)

38. किं कल्याणप्रदम् उच्यते–
(अ) वीरगत्या मरणम् (ब) परनिन्दा (स) आत्मप्रशंसा (द) आत्महननम् (अ)

39. भिल्लाः किं कर्तुम् उद्यता भवन्ति–
(अ) धनबलिदानं (ब) आत्मबलिदानम् (स) आत्मप्रशंसा (द) आत्महननम् (ब)

40. प्रतापः कष्टं स्वीकरोति–
(अ) धनसंग्रहणाय (ब) राज्यसुखाय (स) देशस्य स्वाधीनतायै (द) भोजनाय (स)

शेखावाटी मिशन–100

41. प्रतापः कस्य अभावे किमपि कर्तुम् असमर्थः?

(अ) प्राणाभावे (ब) साधनाभावे (स) विचाराभावे (द) धनाभावे (द)

42. प्रतापाय धनं अर्पयति–

(अ) भामाशाहः (ब) अकबरः (स) भिल्लाः (द) मन्त्रिणः (अ)

43. भामाशाह–प्रदत्तेन धनेन सैनिकाः कति वर्षाणि यावत् योद्धुं शक्नुवन्ति–

(अ) दश वर्षाणि पर्यन्तं (ब) विंशति वर्षपर्यन्तं (स) द्वादश वर्षाणि पर्यन्तं (द) पञ्चदशवर्षाणि पर्यन्तम् (स)

44. सूरजमलस्य अन्यत् नाम आसीत्–

(अ) सज्जनसिंहः (ब) सुजान सिंहः (स) सुरजन सिंहः (द) बदनसिंह (ब)

45. सूर्यमल्ल मिश्रणस्य रचना अस्ति–

(अ) वंश भास्करम् (ब) अर्थशास्त्रम् (स) सुजानचरितम् (द) रामचरितम् (अ)

46. सूरजमलस्य कालः अस्ति–

(अ) नवमी शती ई. (ब) दशमी शती ई. (स) अष्टादश–शती ई. (द) विंश–शती ई. (स)

47. हिन्दू–इतिहासज्ञाः सूरजमल्लं घोषितवन्तः–

(अ) कनिष्कः इव (ब) पृथ्वीराजः इव (स) प्रतापः इव (द) अकबरः इव (अ)

48. गोहननं कः .तवान्–

(अ) अकबरः (ब) औरंगजेबः (स) जहाँगीरः (द) मीर बख्शी सलावत खानः (द)

49. सूदनकवेः सूरजमल्लविषयकं काव्यमस्ति–

(अ) रामचरितम् (ब) सूरजमल्लचरितम् (स) सुजानचरितम् (द) भूपालचरितम् (स)

50. मुस्लिमैः सूरजमल्लं मन्यते–

(अ) अंतिमः प्रतापी हिन्दू नरेशः (ब) जाट–प्लेटो

(स) नेपोलियनः (द) लूथरः (अ)

51. सूरजमलस्य जन्म अभवत्–

(अ) गणेशचतुर्थ्याम् (ब) वसन्तपञ्चम्याम् (स) महाशिवरात्रिम् (द) रामनवम्याम्

52. ''धर्म्याद् हि युद्धात् श्रेयोऽन्यात् क्षत्रियस्य न विद्यते'' इति वचनअस्ति–

(अ) श्रीमदभगवद्गीतायाम् (ब) रामायणे–युद्धकाण्डे (स) पुराणेषु (द) रघुवंशे (अ)

53. सूरजमल्लः कस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत्–

(अ) पृथ्वीराजस्य (ब) प्रतापस्य (स) बदनसिंहस्य (द) सूर्यमल्लस्य (स)

54. ....देवोभव–

(अ) मातृ (ब) पितृ (स) आचार्य (द) एते त्रयः (द)

55. अस्माभिः कानि उपस्यानि?

(अ) चरितानि (ब) सुचरितानि (स) दुश्चरितानि (द) इतराणि (ब)

56. कम् आचरेत्–

(अ) सत्यं (ब) धर्मं (स) नीतिं (द) सुचरितम् (ब)

57. श्रद्धया..................................... ।

(अ) अदेयम् (ब) देयम् (स) चर् (द) वद् (ब)

58. कया अदेयम्?

(अ) श्रद्धया (ब) विनयेन (स) दुःखेन (द) अश्रद्धया (द)

59. प्रमुखाणां कति उपनिषदां पठनं–पाठनं भवति–

(अ) दश (ब) द्वादश (स) त्रयोदश (द) पञ्चदश (अ)

60. आचार्योपदेशः उद्धृतोऽस्ति–

(अ) ईशोपनिषदात् (ब) तैत्तिरीयोपनिषदात् (स) माण्डूक्योपनिषदात् (द) कठोपनिषदात् (ब)

61. स्वाध्याय– प्रवचनाभ्यां न–

(अ) प्रमदितव्यम् (ब) अप्रमदितव्यम् (स) दितव्यम् (द) प्रमाद (अ)

62. ''स्वदेशं कथं रक्षेयम्'' इति पाठस्य रचनाकारः कः?

(अ) पं. विद्याधर शास्त्री (ब) अंबिकादत्त व्यासः (स) देव नारायण शास्त्री (द) नारायण शास्त्री कांकरः (द)

63. प्रतापः केन सह युद्धम् अकरोत्?

(अ) रामेण सह　(ब) अकबरेण सह　(स) नरेन्द्रेण सह　(द) राजेन्द्रेण सह　(ब)

64. ''विजयतां महाराजः'' इति कः कथयति?

(अ) प्रतापः　(ब) भीलः　(स) सर्वदारः　(द) अकबरः　(स)

65. ''त्वदीया जननी धन्या'' इति कस्यै उक्तम्?

(अ) प्रतापाय　(ब) सर्वदाराय　(स) भामाशाहाय　(द) अन्यस्यै　(स)

66. मेवाड़–राज्यस्य राजा आसीत्?

(अ) भामाशाह　(ब) मानसिंहः　(स) अकबरः　(द) प्रतापः　(द)

67. राजस्थानप्रदेशस्य प्रसिद्ध जाट–राजा आसीत–

(अ) राणा सांगा　(ब) सूरजमल्लः　(स) भारमलः　(द) देवसिंह　(ब)

68. सूरजमलस्य गुणः नास्ति–

(अ) वीर्यम्　(ब) करूणा　(स) शरणागतस्य रक्षा　(द) अवीर्यम्　(द)

69. डिंगल भाषायाः ग्रन्थः अस्ति

(अ) अर्थशास्त्रः　(ब) वंशभास्करः　(स) रामायणः　(द) महाभारतः　(ब)

70. सूरजमल्लस्य सप्तसु महत्युद्धेषु वर्णनम् कः अकरोत–

(अ) सूर्यमल्ल मिश्रणः　(ब) अकबरः　(स) कौटिल्य　(द) सूदनः　(द)

71. वीरोत्पादने प्रसिद्धः प्रदेशः अस्ति–

(अ) राजस्थानः　(ब) म्यांमारः　(स) आंग्लप्रदेशः　(द) काबुलः　(अ)

72. किं कार्यम् न करणीयम्–

(अ) दानं　(ब) स्वाध्यायं　(स) प्रमादं　(द) तर्पणं　(स)

73. नियमेन किं करणीयम्–

(अ) प्रमादं　(ब) स्वाध्यायं　(स) कुत्सितकर्माणि　(द) इतराणि　(ब)

74. कः शिष्यम् उपदिशति–

(अ) आचार्यः　(ब) माता　(स) बालकः　(द) पिता　(अ)

75. ब्राह्मणग्रन्थाः सन्ति–

(अ) उपनिषदाः　(ब) आरण्यकग्रन्थाः　(स) वेदेषु व्याख्यारूपाः　(द) वेदाः　(स)

76. विद्यासमाप्त्यनन्तरं छात्रस्यः संस्कारः भवति–

(अ) चूड़ाकर्मसंस्कारः　(ब) जातकर्मसंस्कारः　(स) समावर्तन संस्कारः　(द) केशान्त संस्कारः　(स)

77. भारतवर्षस्य उत्तरस्यां दिशि वर्तते–

(अ) हिमाद्रिः　(ब) विन्ध्याचलः　(स) इन्दुसरोवरः　(द) गंगासागरः　(अ)

78. भारतस्य दक्षिणदिशि स्थितः–

(अ) गंगासागरः　(ब) इन्दुसरोवरः　(स) विन्ध्याचलः　(द) कोऽपिन　(ब)

79. ''अपि स्वर्णमयी लंका'' इत्यादौ कः कं प्रति ब्रूते–

(अ) लक्ष्मणः रामंप्रति　(ब) रामः हनुमन्तं प्रति　(स) रामः लक्ष्मणं प्रति　(द) राम–लक्ष्मणौ सीतांप्रति　(स)

80. राष्ट्रस्य उत्थान–पतनयोः अवलम्बः कः वर्तते–

(अ) राष्ट्रस्य शत्रवः　(ब) राष्ट्रियः　(स) अराष्ट्रिया　(द) राष्ट्रस्य मित्राणि　(ब)

81. ''एतद्देश प्रसूतस्य............'' इति श्लोकः कस्मात् ग्रन्थात् संकलितः–

(अ) मनुस्मृतिः　(ब) चाणक्यः　(स) विष्णुपुराणम्　(द) बृहस्पल्यागमः　(अ)

82. गायन्ति देवाः किल गीतकानि– इत्ययं श्लोकः कस्माद् ग्रन्थाद् उद्धृतः–

(अ) विष्णुपुराणात्　(ब) ऋग्वेदात्　(स) रामायणात्　(द) वृहन्नारदीयपुराणात्　(अ)

83. पृथिव्यां त्रिषु रत्नेषु एतत् न गण्यते–

(अ) धनम्　(ब) जलम्　(स) अन्नम्　(द) सुभाषितम्　(अ)

84. अहिंसा अस्ति–

(अ) परमोधर्मः　(ब) परंतपः　(स) परमं सत्यं　(द) उपर्युक्त सर्वमपि　(द)

शेखावाटी मिशन–100

85. मूढैः पाषाण खण्डेषु विधीयते–
(अ) अलंकार संज्ञा (ब) रत्न संज्ञा (स) स्वर्ण संज्ञा (द) कोऽपिन (ब)

86. प्रसादशिखरस्थोऽपि को न गरूडायते–
(अ) सिहः (ब) काकः (स) श्रृगालः (द) हंसः (ब)

87. कः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति–
(अ) खलः (ब) सज्जनः (स) उभौ (द) कोऽपिन (अ)

88. सद्भिक्षुसाध्विको कः–
(अ) कृष्णः (ब) रामः (स) बुद्धः (द) कोपिन (स)

89. कस्य धनं मदाय भवति–
(अ) खलस्य (ब) सज्जनस्य (स) धनिकस्य (द) सर्वस्व (अ)

90. 'पन्नग' शब्दस्य अर्थोऽस्ति–
(अ) गरूड़ः (ब) पत्रम् (स) नगः पर्वतः वा (द) सर्पः (द)

91. 'खलः परच्छिद्राणि पश्यति' इत्यत्र 'छिद्रम्' इत्यस्य अर्थोऽस्ति–
(अ) विवरम् (ब) दोषः (स) गुणः (द) बिलम् (ब)

92. प्रीति विस्त्रम्भभाजनम् कः भवति–
(अ) मित्रम् (ब) अमित्रम् (स) तटस्थः (द) एतेसर्वेऽपि (अ)

93. ''मरूसौन्दर्यम्:: इति पाठे शरीर विज्ञानः विचक्षणः इति विशेषणं कस्य कृते प्रयुक्तम्–
(अ) आचार्य– चरकस्य (ब) आचार्य–चार्वाकस्य (स) आचार्य–सुश्रुतस्य (द) आचार्य– वाग्भटस्य (अ)

94. मरौः सौन्दर्यम् वर्धते विशेषतः–
(अ) वसन्तर्तौ (ब) ग्रीष्मर्तौ (स) वर्षर्तौ (द) शीतर्तौ (अ)

95. मरूदेशे के प्रसन्नाः सन्ति–
(अ) गावः (ब) मनुजाः (स) देवाः (द) एते सर्वेऽपि (द)

96. शुष्कोऽपि मरूदेशः कीदृशः अस्ति–
(अ) सरसः (ब) नीरसः (स) आर्द्रः (द) अरम्यः (अ)

97. मरौ केषां नर्तनं दृश्यते–
(अ) तित्तिराणां (ब) बर्हविभूषणानां (स) कुरंगाणां (द) वानराणां (ब)

98. सैकतवप्रसानाः कुत्र सन्ति–
(अ) मरूप्रदेशे (स) अरावलीप्रदेशे (स) हिमालयप्रदेशे (द) हाड़ौती प्रदेशे (अ)

99. मरौ भवता कः विधेयः–
(अ) धन समृद्धः (स) विद्यासमृद्धः (स) जलसमृद्धः (द) ऊर्जासमृद्धः (ब)

100. मरूदेशे केषां मधुरो विरावः श्रूयते–
(अ) तित्तिराणां (ब) मयूराणां (स) क्रमेलकानां (द) कुरङ्गमाणाम् (अ)

101. क्रमेलकानां गतयः कुत्र दर्शनीया–
(अ) अरावलीप्रदेशे (ब) हिमालयप्रदेशे (स) मरूप्रदेशे (द) कोऽपि न (स)

व्याकरणाधारित–अतिलघूत्तरात्मकप्रश्ननानि

निम्नाङ्किकतपदानां संधिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत –

1. धन्यास्तु = धन्याः+तु (सत्व विसर्गः)
2. भवतस्सर्वदा = भवतः+ सर्वदा (सत्व विसर्गः)
3. जन्मभूमिश्च = जन्मभूमिः + च (सत्व विसर्गः)
4. कोऽस्य = कः + अस्य (उत्व विसर्गः)
5. धर्मस्तथा = धर्मः+ तथा (सत्व विसर्ग)
6. धन्योऽसि = धन्यः+ असि (उत्व विसर्गः)
7. प्रशंसितोऽयम् = प्रशंसितः +अयम् (सत्व विसर्ग)
8. शुष्कोऽपि = शुष्कः + अपि (उत्व विसर्ग)
9. गतयश्च = गतयः+च (सत्व विसर्ग)
10. निश्छलः = निः+छलः (सत्व विसर्गः)

शेखावाटी मिशन–100

निम्नांकितपदानां संधिः कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत–

1. कः+अपि = कोऽपि (उत्व विसर्ग)
2. शिवः+वन्द्यः = शिवोवन्द्यः (उत्व विसर्ग)
3. धेनुः+ गच्छति = धेनुर्गच्छति (रूत्व विसर्ग)
4. पुनः+अत्र = पुनरत्र (रुत्व विसर्ग)
5. रामः+आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग लोप)
6. कृष्णः+एति = कृष्ण एति (विसर्ग लोप)
7. अतः+एव = अतएव (विसर्ग लोप)
8. पुनः + च = पुनश्च (सत्व विसर्ग)
9. कः + अभूद् = कोऽभूद् (उत्व विसर्ग)
10. पथिक : + अपि = पथिकोऽपि (उत्व विसर्ग)
11. कृषेः + भयम् = कृषेर्भयम् (रुत्व विसर्ग)

अधोलिखितपदेषु समासविग्रहं कृत्वा समासस्य नाम अपि लिखत–

1. अध्यात्मम् = आत्मनि इति (अव्ययीभावः)
2. निर्जनम् = जनानाम् अभावः (अव्ययीभावः)
3. अधिविष्णु = विष्णौ इति (अव्ययीभावः)
4. अध्यग्नि = अग्नौ इति (अव्ययीभावः)
5. उपलतम् = लतायाः समीपम् (अव्ययीभावः)
6. उपनदम्/उपनदि = नद्याः समीपम् (अव्ययीभावः)
7. उपवनम् = वनस्य समीपम् (अव्ययीभावः)
8. निर्मशकम् = मशकानाम् अभावः (अव्ययीभावः)
9. निष्कण्टकम = कण्टकानाम् अभावः (अव्ययीभावः)
10. निष्क्रियम् = क्रियायाः अभावः (अव्ययीभावः)
11. निष्फलम् = फलानाम् अभावः (अव्ययीभावः)
12. अनुकूलम् = कूलस्य योग्यम् (अव्ययीभावः)
13. अनुगुणम् = गुणस्य योग्यम् (अव्ययीभावः)
14. प्रत्यक्षरम् = अक्षरम् अक्षरं प्रति (अव्ययीभावः)
15. प्रत्येकम् = एकम् एकं प्रति (अव्ययीभावः)
16. प्रत्यर्यम् = अर्थम् अर्थं प्रति (अव्ययीभावः)
17. प्रत्यर्थम् = अर्थम् अर्थं प्रति (अव्ययीभावः)
18. यथास्थानम् = स्थानम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभावः)
19. यथायोग्यम् = योग्यताम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभावः)
20. यथाक्रमम् = क्रमम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभावः)
21. यथारुचि = रूचिम् अनतिक्रम्य (अव्ययीभावः)
22. अन्वयम् = अस्य पश्चात् (अव्ययीभावः)

अधस्तनेषु वाक्येषु रेखांकित– शब्देषु प्रयुक्तमाना विभक्तिः तस्याः कारणं च लिखत–

1. ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति।

उतर – विभक्तिः – द्वितीया

कारणम् – 'परितः' शब्दस्य योगे

2. कविषु कालिदास श्रेष्ठः।

उतर – विभक्तिः – सप्तमी

कारणम् – 'इष्ठन्' प्रत्ययस्य योगे।

3. 'हरये रोचते भक्तिः।'

उतर – विभक्तिः – चतुर्थी

कारणम् – 'रुच्' धातोः योगे

4. ‘हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।’
उतर – विभक्तिः – द्वितीया
कारणम् – ‘अधि’–उपसर्गपूर्वक ‘शीङ्’ धातोः योगे
5. ‘कृषकः ग्रामम् अजां नयति।’
उतर – विभक्तिः – द्वितीया
कारणम् – द्विकर्मक – ‘नी’ धातोः योगे गौणे कर्मणि द्वितीया भवति।
6. ‘साधुः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।’
उतर – विभक्तिः – तृतीया
कारणम् – अंगविकारस्य योगे
7. ‘हिमालयात् गंगा प्रभवति।’
उतर – विभक्तिः – पंचमी
कारणम् – ‘भू’ धातोः योगे उत्पत्तिस्थाने
8. ‘रामः श्यामाय शतं धारयति।’
उतर – विभक्तिः – चतुर्थी
कारणम् – धारयतेः प्रयोगे उत्तमर्णे।
9. ‘हनुमते नमः।
उतर – विभक्तिः – चतुर्थी
कारणम् – ‘नमः’ शब्दस्य योगे
10. विद्यालयस्य पुरः मन्दिरम् अस्ति।
उतर – विभक्तिः – षष्ठी
कारणम् – ‘पुरः’ शब्दस्य योगे

प्रश्न – कोष्ठकगतशब्देषु उचितविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

1. नास्ति .... समः शत्रुः। (क्रोध)
2. माता .... स्निह्यति। (शिशु)
3. .... भीतः बालकः क्रन्दति। (चौर)
4. अलं ....। (विवाद)
5. .... परितः जलम् अस्ति। (ग्राम)
6. .... रामायणं रोचते। (भक्त)
7. .... बहिः छात्राः कोलाहलं कुर्वन्ति। (कक्षा)
8. भिक्षुकः .... भिक्षां याचते। (नृप)
9. जनकः .... क्रुध्यति। (पुत्र)
10. बालकः .... अधिशेते। (पर्यंक)
11. पिता .... स्निह्यति। (पुत्र)
12. .... वनं गते दशरथः प्राणान् अत्यजत्।
13. बालकः .... निलीयते। (मातृ)
14. मोहनः .... प्रमाद्यति। (अध्ययन)
15. जननी जन्मभूमिश्च .... अपि गरीयसी। (स्वर्ग)

उत्तर तालिका

1. क्रोधेन/क्रोधस्य	2. शिशौ	3. चौरात्	4. विवादेन
5. ग्रामम्	6. भक्ताय	7. कक्षायाः	8. नृपं
9. पुत्राय	10. पर्यंकम्	11. पुत्रे	12. रामे
13. मातुः	14. अध्ययनात्	15. स्वर्गात्	

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न – अधोलिखित पदानां प्रकृतिप्रत्ययौ लिखत–

1. पठन् – पठ् + शतृँ
2. सन् – अस् + शतृँ
3. पश्यन्ती – दृश् + शतृँ + ङीप्
4. जिघ्रन – घ्रा + शतृँ
5. नयन् – नी + शतृँ
6. पिबन् – पा + शतृँ
7. पचमानः – पच् + शानच्
8. लभमाना – लभ् + शानच् + टाप्
9. मोदमानः – मुद् + शानच्
10. म्रियमाणः– मृ + शानच्
11. मन्यमानः – मन् + शानच्
12. कुर्वाणः – कृ + शानच्
13. धीमान् – धी + मतुँप्
14. बुद्धिमती – बुद्धि + मतुँप् + ङीप्
15. हिमवान् – हिम + मतुँप्
16. आयुष्मान् – आयुस् + मतुँप
17. गुणवती – गुण + मतुँप् + ङ्वीप्
18. रूपवान् – रूप + मतुँप्
19. क्रोधी – क्रोध + इन्
20. मायी – माया + इन्
21. दण्डी – दण्ड + इन्
22. पताकी – पताका + इन्
23. ज्ञानी – ज्ञान + इन्
24. गुणी – गुण + इन्
25. ऐकिक – एक + ठक्
26. धातविक – धातु + ठक्
27. आणविकी – अणु + ठक् + ङीप्
28. नैतिक – नीति + ठक्
29. हार्दिकम् – हृद + ठक्
30. यौगिकम् – योग + ठक्

प्रश्न – रेखांकित पदेषु प्रकृति प्रत्ययौ पृथक् कृत्वा लिखत–

1. ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
उत्तर– गम् + शतृँ
2. आपणं गच्छन्ती माता–शिशु पश्यति–
उत्तर– गम् + शतृँ + ङीप्
3. ओदनं भुञ्जानः विषं भुङ्क्ते।
उत्तर– भुञ्ज् + शानच्
4. गुरुः सेवमाना बालिका सुखं लभते।
उत्तर– सेवम् + शानच्
5. मनुष्यः सामाजिकः प्राणी अस्ति–
उत्तर– समाज+ ठक्
6. मनुष्यः सामाजिकः प्राणी अस्ति।
उत्तर– प्राण+ इन्
7. बुद्धिमान् नरः सर्वत्र सम्मानं लभते।
उत्तर– बुद्धि+शानच्

8. सा बुद्धिमती आसीत्।

उत्तर– बुद्धि + मतुँप् + ङीप्

9. सः कार्यं कुर्वन् अपिं पठति।

उत्तर– कृ + शतृँ

10. एवं चिन्तयन् सः कृष्णसर्पं अपश्यत्।

उत्तर– चिन्त् + शतृँ

11. धनी इच्छानुसारं कार्यं करोति।

उत्तर– धन + इन्

12. सूर्यस्य प्रकाशः सर्वत्र वर्तमानः अस्ति–

उत्तर– वृत् + शानच्

13. सदा सुखी भव।

उत्तर– सुख + इन्

14. सा अत्यधिका रूपवती अस्ति।

उत्तर– रूप + मतुँप्।

15. साप्ताहिकः अवकाशः रविवासरे भवति।

उत्तर– सप्ताह + ठक्

प्रश्न – मंजूषायां प्रदत्तैः अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां लिखत–

अपि, इव, इति, उच्चैः, कदा, कुतः, नूनम्, यत्, अत्र, तत्र, कुत्र, अधुना, बहिः, उदानीम्, सम्प्रति

1. 'पुराणम् .... एव न साधु सर्वम्'
2. .... सन्निहितोऽत्र कुलपतिः?
3. भवान् .... समायातः?
4. लिम्पति .... तमोऽङ्गानि।
5. ग्रामाद् .... एका नदी वहति।
6. अहम् .... वक्तुं न शक्ये।
7. सः विद्यालयं .... गच्छति?
8. सः सत्यम् एव कथयति .... सः सर्वं जानाति।
9. .... वयं संस्कृतं पठिष्यामः।
10. .... त्वया तत्र गन्तव्यम्।

उतरमाला

प्र.सं.	1	2	3	4	5
उतर	इति	अपि	कुतः	इव	बहिः
प्र.सं.	6	7	8	9	10
उतर	उच्चैः / अपि	कदा	यत्	अधुना / इदानीम् / सम्प्रति	नूनम्

प्रश्न – अधोलिखित वाक्यानां वाच्य–परिवर्तनं कुरूत–

1. अयं ददाति – अनेन दीयते
2. ताः वदन्ति – ताभिः उद्यते
3. भवती गच्छति – भवत्या गम्यते
4. आवां क्रीडावः – आवाभ्यां क्रीड्यते
5. ते पत्राणि लिखन्ति – तैः पत्राणि लिख्यन्ते
6. सः गच्छति – तेन गम्यते
7. यूयं पठथ – युष्माभिः पठ्यते
8. अहं पठामि – मया पठ्यते
9. पुत्रः पितरं सेवते – पुत्रेण पिता सेव्यते
10. माता भोजनं पचति – मात्रा भोजनं पच्यते

11. दर्शकाः नाटकं पश्यन्ति – दर्शकैः नाटकं दृश्यते
12. वयं विद्यालयं गच्छामः – अस्माभिः विद्यालयः गम्यते
13. त्वं फलानि खादसि – – त्वया फलानि खाद्यन्ते
14. एतेन गीतं गीयते – एषः गीतं गायति।
15. अहं श्लोकान् पठामि – मया श्लोकाः पठ्यन्ते

प्रश्न – अधोलिखित वाक्यानि शुद्धं कृत्वा लिखत–

1. राजपुरुषः चौरस्य अनुधावति। – राजपुरुषः चौरम् अनुधावति।
2. ग्रामस्य परितः जलम् अस्ति। – ग्रामं परितः जलम् अस्ति।
3. साधुः दुर्जनेन जुगुप्सते। – साधुः दुर्जनात् जुगुप्सते।
4. अहं रेलयानात् ग्रामं गतिष्याभि। – अहं रेलयानेन ग्रामं गमिष्यामि।
5. ईश्वरं नमः। – ईश्वराय नमः।
6. अध्यापकः आसनम् तिष्ठति। – अध्यापकः आसने तिष्ठति।
7. माम् मिष्टान्नं रोचते। – मह्यं/मे मिष्टान्नं रोचते।
8. अलं विवादम्। – अलं विवादेन।
9. सुरेशः नेत्रेण अन्धः अस्ति। – सुरेशः नेत्राभ्याम् अन्धः अस्ति।
10. सः सुखं लभति। – सः सुखं लभते।
11. भवान् तत्र गच्छसि। – भवान् तत्र गच्छति।
12. पिता पुत्रे क्रध्यति। – पिता पुत्राय क्रुध्यति।
13. बालकाः पाठं पठति। – बालकाः पाठं पठन्ति।
14. चत्वारः बालिकाः चतस्रः फलानि खादन्ति। – चतस्रः बालिकाः चत्वारि फलानि खादन्ति।

अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत–

1. जल के बिना जीवन संभव नहीं है। – जलं/जलेन/जलात् विना जीवनं सम्भवं नास्ति।
2. राम के साथ श्याम जाता है। – रामेण सह श्यामः गच्छति।
3. बच्चा गेंद से खेलता है। – बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
4. हम दोनों घर जाएंगे। – आवां ग्रहं गमिष्यावः।
5. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। – वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
6. वह सिर से गंजा है। – सः शिरसा खल्वाटः अस्ति।
7. गाँव के बाहर एक मन्दिर है। – ग्रामाद् बहिः एकं मन्दिरम् अस्ति।
8. यह मोहन का घर है। – इदं मोहनस्य गृहम् अस्ति।
9. मोहन सोहन से चतुर है। – मोहनः सोहनात् पटुतरः अस्ति।
10. बालिकाओं में रमा सबसे चतुर है। – बालिकानां/बालिकासु रमा पटुतमा।
11. मैं कल जयपुर जाऊँगा। – अहं श्वः जयपुरं गमिष्यामि।
12. गंगा हिमालय से निकलती है। – गंगा हिमालयात् प्रभवति।
13. माता पुत्र से स्नेह करती है। – माता पुत्रे स्निह्यति।
14. हमें सत्य बोलना चाहिए। – वयं सत्यं वदेम।
15. छात्र गुरू से प्रश्न पूछता है। – छात्रः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
16. मुझे लड्डू अच्छे लगते हैं। – मह्य/मे मोदकानि रोचन्ते।
17. मेरी कक्षा में तीस छात्र हैं। – मयि कक्षायां त्रिंशत् छात्राः सन्ति।
18. दस बज गये। – इदानीं दशवादनं जातम्।
19. हमें संस्कृत पढ़नी चाहिए। – वयं संस्कृतं पठेम।
20. कक्षा–कक्ष के बाहर शिक्षक हैं। – कक्षाकक्षाद् बहिः शिक्षकाः सन्ति।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न – अंकानां स्थाने संस्कृतपदैः समयलेखनं कुरूत–

1. महेशः रात्रौ–––– शयंन करोति। (10:15) –सपाददशवादने
2. शताब्दी रेलयानं––––जयपुरात् देहलीं गच्छति। (9:45) –पादोनदशवादने
3. सीमा प्रातः––––विद्यालयं गच्छति। (9:10) –दशकलोत्तर–नववादने
4. सा पुनः–––– गृहं आगच्छति। (3:05) –पंचकलोत्तर–त्रिवादने
5. मोहनः प्रातः काले––––मन्दिरं गच्छति। (8:00) –अष्टवादने
6. सः सायंकाले––––भ्रमणाय गच्छति। (6:30) –सार्धषड्वादने
7. लता––––अल्पाहारं करोति। (7:45) –पादोनअष्टवादने/पादोनाष्टवादने
8. त्वम् मध्याह्ने ––––भोजनं करोति। (1:30) –सार्धएकवादने/सार्धेकवादने
9. प्रातः––––सरस्वती वन्दनां कुरुत। (6:00) षड्वादने
10. सः––––विद्यालयात् गृहम आगच्छति। (4:00) सार्धचतुर्वादने

प्रश्न – रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

1. भवतः सदा विजयः एव भविष्यति।

उत्तरम्– कस्य सदा विजयः एवं भविष्यति ?

2. एतेन मम न अपमानः।

उत्तरम्– एतेन कस्य न अपमानः ?

3. भवान् सत्यं वदति।

उत्तरम्– भवान् किं वदति ?

4. सूरजमल्लस्य अपरं नाम सुजानसिंहः आसीत्।

उत्तरम्– सूरजमल्लस्य अपरं नाम किम् आसीत् ?

5. नायकेषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत्।

उत्तरम्– केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत् ?

6. सूरजमल्लः अद्वितीयः योद्धा आसीत्।

उत्तरम्– सूरजमल्लः कीदृशः योद्धा आसीत् ?

7. कोऽपि शासकः सूरजमल्लेन तुल्यः न दृश्यते स्म।

उत्तरम्– कोऽपि शासकः केन तुल्यः न दृश्यते स्म ?

8. स्वकीया मातृभूमिः न दातव्या।

उत्तरम्– का न दातव्या ?

9. स्वाध्यायात् मा प्रमदः।

उत्तरम्– कस्मात् मा प्रमदः ?

10. भूत्यै न प्रमदितव्यम्।

उत्तरम्– कस्यै न प्रमदितव्यम् ?

11. श्रिया देयम्।

उत्तरम्– कया देयम् ?

12. मातृदेवो भव।

उत्तरम्– मातृ कीदृशी भव ?

13. अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि।

उत्तरम्– कानि सेवितव्यानि ?

14. एवम् उपासितव्यम्।

उत्तरम्– कथम् उपासितव्यम् ?

15. एषः आदेशः।

उत्तरम्– एषः कः ?

16. हिमालयाद् समारभ्य इन्दुसरोवरं यावत्।

उत्तरः– कस्माद् समारभ्य इन्दुसरोवरं यावत्?

17. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

उत्तरः– का स्वर्गादपि गरीयसी?

शेखावाटी मिशन–100

18. देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।

उत्तरः– देवनिर्मितं देशं किम् प्रचक्षते?

19 राष्ट्रियाः सर्वदा शिक्षणीयाः।

उत्तरः– के सर्वदा शिक्षणीयाः?

20. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि सन्ति।

उत्तरः– पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति?

21. अहिंसा परमो धर्मः।

उत्तरः– कः परमो धर्मः?

22 तृणात् क्षीरं संजायते।

उत्तरः– कस्मात् क्षीरं संजायते?

23. मूढैः पाषाण–खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

उत्तरः– मूढैः केषु रत्नसंज्ञा विधीयते?

24. वचने दरिद्रता न कर्त्तव्या।

उत्तरः– वचने का न कर्त्तव्या?

25. मरूदेशे तित्तिराणां मधुरो विरावः भवति।

उत्तरः– मरूदेशे केषां मधुरो विरावः भवति?

26. व्रतदानयज्ञैः देवाः प्रसन्नाः सन्ति।

उत्तरः– कैः देवाः प्रसन्नाः सन्ति?

27. मरौ तुन्दिलाः कलिङ्गाः भवन्ति।

उत्तरः– मरौ कीदृशाः कलिङ्गाः भवन्ति?

पाठ्यपुस्तकाधारित–अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नानि

प्रश्न – अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृतेन लिखत–

1. काव्येषु किं रम्यम् उच्यते?

उत्तर– काव्येषु नाटकं रम्यम् उच्यते।

2. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता कः?

उत्तर– अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता महाकविः कालिदासः।

3. राजा दुष्यन्तः कस्य आश्रमं प्रविशति?

उत्तर– राजा दुष्यन्तः महर्षेः मारीचस्य आश्रमं प्रविशति।

4. सिंहशिशुं बलात्कारेण कः कर्षति?

उत्तर– सिंहशिशुं बलात्कारेण बालकः सर्वदमनः कर्षति।

5. वर्णचित्रितः मृत्तिकामयूरः कस्य आसीत्?

उत्तर– वर्णचित्रितः मृत्तिकामयूरः मार्कण्डेयस्य ऋषिकुमारस्य आसीत्।

6. बालकस्य सर्वदमनस्य मातुः नाम किमासीत्?

उत्तर– बालकस्य सर्वदमनस्य मातुः नाम शकुन्तला आसीत्।

7. शकुन्तला कस्य राजर्षेः पत्नी आसीत्?

उत्तर– शकुन्तला राजर्षेः दुष्यन्तस्य पत्नी आसीत्।

8. सर्वदमनः सिंहशावकं किमर्थं कर्षति?

उत्तर– सर्वदमनः सिंहशावकं क्रीड़ितुं कर्षति।

9. तापसी कस्य नाम संकीर्तयितुं न इच्छति?

उत्तर– तापसी धर्मदारपरित्यागिनः नृपस्य नाम संकीर्तयितुं न इच्छति।

10. ''हन्त, वर्धते ते संरम्भयः'' कस्य संरम्भः वर्धते?

उत्तर– बालकस्य सर्वदमनस्य संरम्भ वर्धते।

11. इयम् कस्य अभूमिः?

उत्तर– इयम् अविनयस्य अभूमिः।

12. सर्वदमनस्य मणिबन्धे किम् आबद्धम् आसीत्?

उत्तर– सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम आसीत।

शेखावाटी मिशन–100

13. तापसी केन पदार्थेन निर्मित मयूरम् आनयति?
उत्तर— तापसी मृतिकानिर्मितम् पदार्थेन मयूरम् आनयति।
14. प्रतापस्य सेना केषु कुशला आसीत्?
उत्तर— प्रतापस्य सेना पर्वतीययुद्धेषु कुशला आसीत्।
15. प्रतापः बाल्यकालादेव कीदृशः आसीत्?
उत्तर— प्रतापः बाल्यकालादेव वीरयोद्धा, कुशलसेनानी, धीरनायकश्च आसीत।
16. उदयसिंहस्य अनन्तरं कः मेवाडराज्यसिंहासनम् आरूढवान्?
उत्तर— उदयसिंहस्य अनन्तंर प्रतापः मेवाड़राज्यसिंहासनम् आरूढवान्।
17. मेवाड़राज्यस्य कस्मिन् वंशे वीराणां सुदीर्घा परम्परा विद्यते?
उत्तर— मेवाड़राज्यस्य सिसोदियावंशे वीराणां सुदीर्घा परम्परा विद्यते।
18. केन सह प्रतापस्य अनेकवारं युद्धम् अभवत?
उत्तर— अकबरस्य सेनया सह प्रतापस्य अनेकवारं युद्धम् अभवत।
19. हल्दीघाटीयुद्धे प्रतापः कस्मिन् आरुह्य बहुशौर्यं प्रदर्शितवान्।
उत्तर— हल्दीघाटीयुद्धे प्रतापः 'चेतक' इति नामके अश्वे आरुह्य बहुशौर्यं प्रदर्शितवान्।
20. प्रतापस्य सेना केन कारणेन विघटिता?
उत्तर— प्रतापस्य सेना धनाभावे विघटिता।
21. प्रतापः कान् प्राप्तुं चिन्तनमारेभे?
उत्तर— प्रतापः हस्तच्युतान् प्रमुखदुर्गान् प्राप्तुं चिन्तनमारेभे।
22. प्रतापः कदापि किं न स्वीकृतवान्?
उत्तर— प्रतापः कदापि पराजयं न स्वीकृतवान्।
23. प्रतापः कुत्र उषित्वा सैन्यसंग्रहणम् उपाक्रमत्?
उत्तर— प्रतापः अरण्यगुहाप्रदेशेषु उषित्वा सैन्यसंग्रहणम् उपाक्रमत्।
24. प्रतापः कदा मेवाड़राज्यसिहांसनम् आरूढ़वान्?
उत्तर— प्रतापः स्ववयसः 32 तमे वर्षे मेवाड़राज्यसिंहासनम् आरूढवान्।
25. हल्दीघाटीयुद्धे कस्याः सेनायाः अतिक्षतिः जाता?
उत्तर— हल्दीघाटी—युद्धे मुगलसेनायाः अतिक्षतिः जाता।
26. सतां विभूतयः किमर्थम्?
उत्तर— सतां विभूतयः परोपकारार्थम्।
27. मरूप्रदेशे व्यापतानां मृत्युभोजनं, बालविवाहः, नार्युत्पीडनं, यौतुकप्रथादीनां कुप्रथानां निवारणाय सदैव कः सचेष्टः आसीत्?
उत्तर— स्वामिकेशवानन्दः सचेष्टः आसीत्।
28. स्वामिकेशवानन्दस्य हृदि कस्य अध्ययनेच्छा अङ्कुरिता?
उत्तर— स्वामिकेशवानन्दस्य हृदि संस्कृतस्य अध्ययनेच्छा अङकुरिता।
29. वि.सं. 1956 तमे आगतः दुर्भिक्षः केन नाम्ना कुख्यातः?
उत्तर— सः दुर्भिक्षः 'छप्पनियाअकाळ' इति नाम्ना कुख्यातः।
30. केशवानन्देन 'नागरी—प्रचारिणी सभा' कुत्र प्रारब्धा?
उत्तर— केशवानन्देन 'नागरी—प्रचारिणी सभा' अबोहर नगरे प्रारब्धा।
31. स्वामिकेशवानन्दस्य जीवनं कस्य निदर्शनमस्ति?
उत्तर— स्वामिकेशवानन्दस्य जीवनं सर्वपन्थसद्भावस्य निदर्शनमस्ति।
32. स्वामिकेशवानन्दः संस्कृतं कुत्र पठितवान्?
उत्तर— स्वामिकेशवानन्दः संस्कृतं फाजिल्कानगरे हरिद्वारे, अमृतसरे चापि पठितवान्।
33. बीरमा कस्मिन सम्प्रदाये दीक्षितः?
उत्तर— बीरमा उदासीसम्प्रदाये दीक्षितः।
34. एकलः बीरमा उत्तरस्याम् अहिण्डमानः कुत्र प्राप्तः?
उत्तर— एकलः बीरमा उत्तरस्यां अज्ञातमार्गे अहिण्डमानः पञ्जाबे फिरोजपुरं प्राप्तः।
35. बीरमा रोटिकायाः अक्षरज्ञानस्य च युगपत् दर्शनं कुत्र अकरोत्?
उत्तर— बीरमा रोटिकायाः अक्षरज्ञानस्य च युगपत् दर्शनं आर्यसमाजस्य अनाथालये अकरोत्।

शेखावाटी मिशन—100

36. बीरमाबालकस्य मातुः नाम किमासीत्?
उत्तर– बीरमाबालकस्य मातुः नाम साराँ इत्यासीत्।
37. स्वर्गादपि का गरीयसी?
उत्तर– जननी जन्मभूमिश्च।
38. विद्यायाः प्रकार द्वयं किमस्ति?
उत्तर– शस्त्रविद्या शास्त्र विद्या च।
39. ''स्वंस्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'' इति कथनं कस्य कृते अस्ति?
उत्तर– भारतदेशस्य अग्रजन्मनः कृते अस्ति।
40. वयं किं नमस्यामः?
उत्तर– वयं राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामः।
41. कस्य सन्ततिः भारती उच्यते?
उत्तर– भारतस्य सन्ततिः भारती उच्यते।
42. भारतभूमेः गीतानि के गायन्ति?
उत्तर– भारतभूमेः गीतानि देवाः गायन्ति।
43. के सर्वदा शिक्षणीयाः?
उत्तर– राष्ट्रियाः सर्वदा शिक्षणीयाः।
44. रामाय किं न रोचते?
उत्तर– रामाय स्वर्णमयी लङ्काऽपि न रोचते।
45. राष्ट्रे कदा शास्त्रचर्चा प्रवर्तते?
उत्तर– शस्त्रेण रक्षिते सति राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते।
46. स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूतं देशः कः?
उत्तर– स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूत देशः भारतदेशः।
47. वयं कीदृशीं राष्ट्रदृष्टि नमस्यामः?
उत्तर– वयं राष्ट्रमङ्गलकारिणीं राष्ट्रदृष्टिं नमस्यामः।
48. सम्प्राप्य भारते जन्म केषु पराङ्मुखः भवति।
उत्तर– सम्प्राप्य भारते जन्म सत्कर्मसु पराङ्मुखः भवति।
49. सर्वे प्राणिनः केन तुष्यन्ति?
उत्तर– सर्वे प्राणिनः प्रियवाक्य प्रदानेन तुष्यन्ति।
50. महात्मानः कीदृशाः भवन्ति?
उत्तर– महात्मानः साङ्घिकाः भवन्ति।
51. कैः गौरवमायाति?
उत्तर– गुणैः गौरवमायति।
52. कुत्र दरिद्रता न कर्तव्या?
उत्तर– प्रियवचने दरिद्रता न कर्तव्या।
53. धेनौ तृणात् किं संजायते?
उत्तर– धेनौ तृणात् क्षीरं संजायते।
54. सर्पे कस्मात् विषं संजायते?
उत्तर– सर्पे क्षीरात् विषं संजायते।
55. कीदृशं मित्रं वर्जयेत्?
उत्तर– परोक्षे कार्यहन्तारम् प्रत्यक्षेप्रियवादिनं मित्रं वर्जयेत्।
56. कः सर्वं हरिष्यति?
उत्तर– हरिः सर्वं हरिष्यति।
57. कम् अविचारयन् हन्यात् एव?
उत्तर– आयान्तम् आततायिनम् अविचारयन् हन्यात् एव।
58. गृहीत इव केशेषु मृत्युना किम् आचरेत्?
उत्तर– गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्मम् आचरेत्।

शेखावाटी मिशन–100

59. अजरामरवत् किं चिन्तयेत् प्राज्ञः?

उत्तर– प्राज्ञः अजरामरवत् विद्यामर्थं च चिन्तयेत।

60. धनस्य पूरयिता हर्ता च कोऽस्ति?

उत्तर– धनस्य पूरयिता हर्ता च हरिः अस्ति।

61. पात्र–अपात्र विवेकः केन तुल्यं भवति?

उत्तर– पात्र–अपात्र विवेकः धेनुपन्नगयोः तुल्यं भवति।

62. खलस्य शक्तिः केषां परिपीडनाय?

उत्तर– खलस्य शक्तिः परेषां परिपीडनाय।

63. कुत्र लज्जा त्यक्तव्या सुखार्थिना?

उत्तर– सुखार्थिना धन–धान्य प्रयोगेषु, विद्यायाः संग्रहेषु, आहारे व्यवहारे च लज्जा त्यक्तव्या।

64. नरः कथं वारि अधिगच्छति?

उत्तर– नरः खनित्रेण खनन् वारि अधिगच्छति।

65. कः गुरूगतां विद्याम् अधिगच्छति?

उत्तर– शुश्रूषुः गुरूगतां विद्याम् अधिगच्छति।

66. साधोः विद्या धनं शक्तिः किमर्थं भवति?

उत्तर– साधोः विद्या ज्ञानाय, धनं दानाय, शक्ति परेषां रक्षणाय भवति।

67. मरू–सौन्दर्यम्' इति पाठानुसारेण '' शुष्कोऽपि नित्यं सरसः स देशः'' इति केन प्रशंसितः?

उत्तर– आचार्य चरकेण प्रशंसितः।

68. सैकतवप्रसानाः कुत्र सन्ति?

उत्तर– सैकतवप्रसानाः मरूप्रदेशे सन्ति।

69. आचार्यः चरकः कस्य विद्वान् आसीत्?

उत्तर– आचार्यः चरकः शरीरविज्ञानस्य विद्वान् आसीत्।

70. 'मरूसौन्दर्यम् ' इत्यस्मिन् पाठे कस्य ऋतोः वर्णनं अस्ति।

उत्तर– मरूसौन्दर्यम् ' इत्यस्मिन् पाठे वर्षा ऋतोः वर्णनं अस्ति।

71. मरौ स्फुटं के भान्ति?

उत्तर– मरौ स्फुटं सुमेरूश्रृङ्गाः भान्ति।

72. मरूदेशे मनुष्याणां मूर्ध्नि किम् दर्शनीयम्?

उत्तर– मरूदेशे मनुष्याणां मुर्ध्नि उष्णीषं दर्शनीयम्।

73. मरौ कीदृशाः कलिङ्गाः दृश्यन्ते?

उत्तर– मरौ तुन्दिलाः स्वादुरसाः कलिङ्गाः दृश्यन्ते।

74. मरूदेशे सैकतवप्राः (बालुका–स्तुपाः) कीदृशाः सन्ति?

उत्तर– ते रम्याः सुकोमलाः द्युतिमानाः हैमवर्णाः च सन्ति।

75. सरः सु शरत्प्रसन्नं सलिलं कदा चकास्ति?

उत्तर– सरः सु शरत्प्रसन्नं सलिलं वर्षासमये चकास्ति।

76. मरूदेशः कैः विशिष्टः अस्ति?

उत्तर– मरूदेशः स्नेहार्द्रभावैकरसैः विशिष्ट अस्ति।

77. प्रतापः कुत्र उपविष्टः आसीत्?

उत्तरम्– प्रतापः एकस्यां शिलायाम् उपविष्टः आसीत्।

78. भामाशाहः किम् आदाय प्रतापस्य समीपम् आगच्छति?

उत्तरम्– भामाशाहः धनराशिगृन्थिम् आदाय प्रतापस्य समीपंम् आगच्छति।

79. भामाशाहः किमर्थं स्वसम्पतिं समर्पयति?

उत्तरम्– भामाशाहः देशरक्षायै स्वसम्पतिं समर्पयति।

80. प्रतापः कथं स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति?

उत्तरम्– प्रतापः प्राणैः अपि स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति?

81. किम् महत्पापम् अस्ति?

उत्तरम्– आत्महननं महत्पापम् अस्ति।

शेखावाटी मिशन–100

82. भामाशाहः कियत् धनं प्रतापाय ददाति?

उत्तरम्— भामाशाहः एतावत् विपुलं धनं प्रतापाय ददाति, येन धनेन द्वादश—वर्षार्णि यावत् पञ्चविंशति सहस्र सैनिकाः सहर्षं योद्धुं शक्नुवन्ति स्म।

83. कः अरण्ये उपविष्टः खिन्नः भवति?

उत्तरम्— प्रतापः अरण्ये उपविष्टः खिन्नः भवति।

84. जाट—प्लेटो कः कथ्यते?

उत्तरम्— महाराजा सूरजमल्लः कथ्यते।

85. सूरजमल्लेन कति युद्धेषु विजयश्री प्राप्यते?

उत्तरम्— सूरजमल्लेन सप्तसु युद्धेषु विजयश्री प्राप्यते।

86. सूरजमल्लः अर्थशास्त्रेषु कः मन्यते?

उत्तरम्— सूरजमल्लः अर्थशास्त्रेषु कौटिल्यः मन्यते।

87. सूरजमल्लस्य मृत्युः कदा कथं च अभवत्?

उत्तरम्— सूरजमल्लस्य मृत्युः युद्धमानः रणे चाभिमुखे 25 दिसम्बर,1763 ई. वर्षे अभवत्।

88. कीदृशानि कार्याणि सेवितव्यानि?

उत्तरम्— अनवद्यानि कर्माणि सेवितव्यानि।

89. समावर्तन संस्कारस्य अवसरे कः शिष्यम् उपदिशति ?

उत्तरम्— समावर्तन संस्कारस्य अवसरे आचार्यः शिष्यम् उपदिशति।

90. कति वेदाः सन्ति ?

उत्तरम्— चत्वारः वेदाः सन्ति।

91. काभ्यां कार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् ?

उत्तरम्— देवपितृ कार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।

92. केषु—केषु कार्येषु कदापि प्रमादः न करणीयः ?

उत्तरम्— सत्यात्, धर्मात्, कुशलात्, भूत्यै, स्वाध्याय—प्रवचनाभ्याम्, देवपितृकार्याभ्यां च कदापि प्रमादः न करणीयः।

93. कम् अनूच्य आचार्यः उपदिशति ?

उत्तरम्— वेदम् अनूच्य आचार्यः उपदिशति ?

94. आचार्यः कं अनुशासति ?

उत्तरम— आचार्यः अन्तेवासिनमनुशास्ति।

95. श्रद्धया किं कर्तव्यम् ?

उत्तरम्— श्रद्धया देयम्।

96. धनं प्राप्य प्रतापः किम् उद्घोषयति ?

उत्तरम्— धनं प्राप्य महाराणा प्रतापः उद्घोषयति यत् "अद्य अस्मात् एवं क्षणात् राणा स्वदेशस्य पारतन्त्र्य—शृंखलाः त्रोटयितुं शत्रून् संहारयितुं धर्मं रक्षितुं च योत्स्यते, अवश्यं योत्स्यते।"

97. भामाशाहः देश—धर्मयोः रक्षां कर्तुं कम् प्रति कथयति ?

उत्तरम्— भामाशाहः देश—धर्मयोः रक्षां कर्तुं प्रतापं प्रति कथयति।

98. कीदृशं मरणं कल्याणप्रदं कथ्यते ?

उत्तरम्— वीरगत्या मरणं कल्याणप्रदं कथ्यते।

99. आत्महननं तु केषां कर्म ?

उत्तरम्— आत्महननं तु नपुंसकानां कर्म।

100. कयोः द्वयोर्मेलनं धन्यमस्ति ?

उत्तरम्— भामाशाहप्रतापयोः मेलनं धन्यमस्ति।

101. नायकेषु अन्यतमः कः आसीत् ?

उत्तरम्— नायकेषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत्।

102. खड्गं चलायमानं कं वीक्ष्य अरयोअपि विस्मिता जायन्ते स्म ?

उत्तरम्— सूरजमलः पाणियुगलेन खड्गं चलायमानं वीक्ष्य अरयोअपि विस्मिताः जायन्ते स्म।

शेखावाटी मिशन—100

शेखावाटी मिशन–100

103. भारतस्य राजनीतिः कदा दोलायमाना आसीत् ?

उत्तरम्– सूरजमलस्य जन्मसमये भारतस्य राजनीतिः दोलायमाना आसीत्।

104. सूरजमल्लः नीतिज्ञेषु कस्यः तुल्यः आसीत्।

उत्तरम्– सूरजमल्लः नीतिज्ञेषु कृष्णस्य तुल्यः आसीत्।

105. किं वद ?

उत्तरम्– सत्यं वद।

106. किं चर ?

उत्तरम्– धर्मं चर।

107. सत्यात् किन्न कर्त्तव्यम् ?

उत्तरम्– सत्यात् न प्रमादितव्यम्।

108. मातापितरौ कयोः तुल्यः भव ?

उत्तरम्– मातापितरौ देवयोः तुल्यः भव ?

109. कानि उपास्यानि ?

उत्तरम्– सुचरितानि उपास्यानि।

110. कः मुगलशासकः सूरजमल्लेन सह संधि कृतवान ?

उत्तरम्– मीर बख्शी सलावतखान–मुगलशासकः कृतवान।

111. सूरजमल्लः कस्योपरि प्रत्यक्षं प्रहारमकरोत् ?

उत्तरम्– सूरजमल्लः मुगलसाम्राज्यस्योपरि प्रत्यक्षं प्रहारम् अकरोत्।

अनुवादकार्यम्

1. अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवाद लिखत।

बाल – जृम्भस्व सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये।

प्रथमा– अविनीत, किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त, वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

द्वितीया– एषा खलु केसरिणी त्वां लंघयिष्यति यदि तस्याः पुत्रकं न मुञ्चसि।

बालः (सस्मितम्) अहो, बलीयः खलु भीतोऽस्मि। (इत्यधरं दर्शयति)

प्रथम– वत्स एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च। अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।

बाल– कुत्र? देहोतत् (इति हस्तं प्रसारयति)

प्रसंग– प्रस्तुत नाट्यांश हमारी ''स्पन्दना'' नाम की पाठ्यपुस्तक के पाठ ''जृम्भस्व सिंह/दन्तांस्ते गणयिष्ये'' से लिया गया है। मूलतः यह पाठ कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुंतलम् के सप्तम अंक से संकलित है। इस अंश में बालक सर्वदमन के सिंह के बच्चे के साथ क्रीड़ा व दो तपस्विनियों के मध्य वार्तालाप का वर्णन है।

अनुवाद– बालक– सिंह! मुख खोलो, मैं तुम्हारे दाँतो को गिनूँगा। पहली तपस्विनी – विनम्रता से हीन! (निर्दयी) हमारी सन्तान के समान माने गये इन जीवों को क्यों परेशान कर रहे हो? ओह तुम्हारा क्रोध तो बढ़ रहा है।

ऋषियों द्वारा तेरा सर्वदमन नाम उचित ही रखा है।

दूसरी तपस्विनी – यह शेरनी अवश्य ही तुझ पर आक्रमण कर देगी, यदि तुम उसके बच्चे को नहीं छोड़ते हो।

बालक (मुस्कुराकर) अरे, तब तो मैं बड़ा डर गया हूँ। (यह कहकर अपना अधरोष्ठ दिखाता है)

पहली तपस्विनी – पुत्र! इस सिंह के बच्चे को छोड़ दो, मैं तुझे दूसरा खिलौना दूँगी।

बालक – कहाँ है? वह खिलौना मुझे दो। (यह कहकर हाथ फैलाता है)

2. अधोलिखित पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवाद लिखत–

(प्रविश्य मृण्मयूरहस्ता)

तापसी – सर्वदमन, शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व।

बालः – (सदृष्टिक्षेपम) कुत्र वा मम माता?

उभे – नाम सादृश्येन वञ्चितो मातृवत्सलः।

द्वितीया – वत्स, अस्य मृत्तिकामयूरस्य रम्यत्वं पश्येति भणितोऽसि।

प्रसंग— प्रस्तुत नाट्यांश हमारी ''स्पन्दना'' पाठ्यपुस्तक के ''जृम्भस्व सिंह / दन्तांस्ते गणायिष्ये'' पाठ से लिया गया है। यह पाठ महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुंतल' नाम के नाटक से संकलित है। इस नाटयांश में दो तपस्विनियों के मध्य मिट्टी के मोर की सुन्दरता का वर्णन है।

हिन्दी अनुवाद—

(मिट्टी का मयुर हाथ में लिए हुए तापसी प्रवेश करके)

तापसी – सर्वदमन! पक्षी के सौन्दर्य (शकुन्तलावण्य) को देखो।

बालक – (निगाह फेंकते हुए) कहाँ है मेरी माता?

दोनों – नाम की समानता के कारण बालक धोखा खा गया।

दूसरी – बेटा इस मिट्टी के मोर की सुन्दरता देख, ऐसा कहाँ गया है।

3. **अधोलिखित पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

शत्रुभिः सह दीर्घकालीनानां युद्धानां कारणेन मेवाड़राज्य—स्थितिः समीचीना न आसीत्। यद्यपि प्रतापस्य पिता महाराणा उदयसिंहः प्रतापी राजा आसीत्, किन्तु परिस्थितिवशात् चितौड़ादिस्थानानि आक्रान्तृभिरधिगृहीतानि। अतएव सिहांसनमधिरूढ़ः प्रतापः हस्तच्युतान् प्रमुखदुर्गान् प्राप्तुं चिन्तनभारेभे।

प्रथमं सः स्वस्वामिभक्तसामन्तानां स्थानीयभिल्लजनानां च सभाम् आकारितवान्। तत्रैव सः प्रतिज्ञां कृतवान् – ''यावत् अहम् हस्तच्युतान् स्वराज्यभागान् पुनः न प्राप्स्यामि, तावत् सुवग्रपात्रेषु भोजनं न करिष्यामि, राजप्रासादे वासं न करिष्यामि, मृदृतल्पे च शयनं न करिष्यामि।''

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के ''महाराणा प्रतापः'' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसमें महाराणा प्रताप के देश—प्रेम, त्याग, दृढ़ प्रतिज्ञा एवं साहस का प्रेरणास्पद वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—

शत्रुओं के साथ लम्बे समय तक के युद्धों के कारण मेवाड़ राज्य की स्थिति ठीक नहीं थी। यद्यपि प्रताप के पिता महाराणा उदयसिंह प्रतापी राजा थे, किन्तु परिस्थिति के कारण चितौड़ आदि स्थानों को आक्रामणकारियों द्वारा अधिगृहीत कर लिये गये थे। इसलिये सिंहासन पर विराजमान प्रताप ने अपने नियंत्रण से अलग हुए प्रमुख दुर्गो को प्राप्त करने के लिए चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया।

सबसे पहले उन्होंने अपने स्वामिभक्त सामन्तों और स्थानीय भीलों की सभा बुलाई। वही पर उन्होंने प्रतिज्ञा की –

''जब तक मैं अपने नियन्त्रण से अलग हुए अपने राज्य के भागों को फिर से प्राप्त नहीं करूँगा, तब तक सोने के पात्रों में भोजन नहीं करूँगा, राजमहल में निवास नहीं करूँगा और कोमल बिस्तर पर शयन नहीं करूँगा।''

4. **अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

तेन पुनः सैन्यशक्तिसंग्रहकार्यम् आरब्धम्, महासैन्यं स रचयामास। तथा सेनया च मुगलशासनं प्रति स्वातन्त्रययुद्धं प्रारभत। स्वराज्यहस्तच्युतान् अनेकभागान् पुनः हस्तगतान् कृतवान। तेषु मोही गोगुन्दा, उदयपुरम् इत्यादयः मुख्याः आसन्। स्वराज्ये शान्तिं संस्थाप्य 'चावण्ड' नामकं स्थानं स्वराजधानीम् अकरोत्। तस्मिन काले 'चावण्ड' स्थानं स्थापत्य कलायाः ललित कलायाः, वाणिजस्य, विषायाश्च प्रमुख केन्द्रम् आसीत्।

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'महाराणा प्रतापः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। प्रस्तुत अंश में भामाशाह द्वारा प्राप्त सम्पति से महाराणा—प्रताप द्वारा सैन्य शक्ति का संग्रह करने, स्वतन्त्रता युद्ध करने का, अपने राज्यों को स्वतन्त्र कराने का प्रेरणास्पद वर्णन हुआ है।

हिन्दी अनुवाद—

उससे (भामाशाह के धन से) फिर से सैन्य—शक्ति का संग्रह कार्य प्रारम्भ कर दिया और उन्होंने विशाल सेना की रचना की और उस सेना के द्वारा मुगल शासक से स्वतन्त्रता का युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अपने राज्य के अपने हाथ से निकले हुए अनेक भागों को पुनः अपने नियन्त्रण में कर लिया। उनमें मोही, गोगुन्दा, उदयपुर आदि मुख्य थे। अपने राज्य में शान्ति की स्थापना करके 'चावण्ड' नामक स्थान को अपनी राजधानी बनाया। उस समय 'चावण्ड' नामक स्थान स्थापत्य कला का, ललित काला का, व्यापार का और विद्या का प्रमुख केन्द्र था।

5. **अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

स्वामिनो जीवनं सर्वपन्थसदभावस्य निदर्शनमस्ति। अयं हि जाट—जातौ जातः परं सिक्खगुरौ नानकदेवस्य पुत्रेण श्रीचन्देन प्रवर्तिते उदासी सम्प्रदाये दीक्षितः। गुरूग्रन्थस्योत्तमः पाठी अभूत्। एकादशवार्षिक—साधनया 700 पृष्ठान्मकस्य सिक्खेतिहासस्य लेखनं कारितवान्। विभाजनकालीने हिंसाचारे क्षतानां मुस्लिम बन्धूनां चिकित्साकारिता।

शेखावाटी मिशन—100

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसमें स्वामी केशवानन्द के प्रेरणास्पद जीवन एवं कार्यो का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद—

स्वामी जी का जीवन सभी पन्थों के सद्भाव का उदाहरण है। यह जाट जाति में उत्पन्न हुआ है, किन्तु सिक्खों के गुरू नानकदेव के पुत्र श्रीचन्द द्वारा स्थापित उदासी—सम्प्रदाय में दीक्षित हुआ। गुरू ग्रन्थ का श्रेष्ठ पाठक बना। ग्यारह वर्षो की साधना से 700 पृष्ठों में सिक्खों के इतिहास लेखन का कार्य किया।

विभाजन के समय हिंसा होने पर घायल मुस्लिम भाईयों की चिकित्सा कराई।

6. **अधोलिखितस्य पठित गद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

स्वामिकेशवानन्दस्य जन्म पौष मासे 1940 तमे विक्रम—संवत्सरे (ईस्वी 1883) राजस्थानस्य सीकर— जनपदे मंगलुणा—ग्रामे अभवत्। अस्य पितुर्नाम ठाकुरसी ढ़ाका इति मातुश्च नाम साराँ इत्यासीत्। बाल्ये केशवानन्दस्य नाम 'बीरमा' इत्यासीत्। यदा एषः बालः सप्तवर्षकल्पः आसीत् तदैव उष्ट्रमेकमाश्रित्य रत्नगढ़—स्थले जीवनयापनं कुर्वन्नस्य पिता दिवंग्ड़तः।

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस अंश में स्वामी केशवानन्द का जीवन परिचय दिया गया है।

हिन्दी अनुवाद—

स्वामी केशवानन्द का जन्म पौष माह में विक्रम संवत् 1940 में (सन् 1883 ई.मे.) राजस्थान के सीकर जिले के ''मंगलुणा'' गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम 'ठाकुर सी ढ़ाका' और माता का नाम साराँ था। बचपन में केशवानन्द का नाम 'बीरमा' था। जब यह बालक लगभग सात वर्ष का था, तभी एक ऊँट पर बैठकर 'रतनगढ़ नामक स्थान पर जीवनयापन करते हुए इनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

7. **अधोलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

महाराजस्य सूरजमलस्य जन्म वसन्तपंचम्याम् (13 फब्रवरी दिने) 1707 तमे ईस्वीयवर्षे अभवत्। स हि महाराजस्य बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः तस्योत्तराधिकारी चासीत्। सूरजमल्लस्य अपरम् एकं नाम सुजानसिंहः इत्यासीत्। अष्टादश—शताब्दस्य भारतस्य नायकेषु अन्यतमः आसीत् सूरजमल्लः। तस्य जनिः तदा अभूत् यदा भारतदेशस्य राजनीतिः अत्यन्तं दोलायमाना आसीत्, भारतं च विध्वंसक—शक्तीनां बाहुपाशे सर्वथा निबद्धम् आसीत्। नादिरशाहः, अहमदशाहः अब्दाली इत्येताभ्यां पापिभ्याम् उत्तर—भारते महता प्रमाणेन नरवधाः गोवधाश्च क्रियन्ते सम, तीर्थानि मन्दिराणि च विध्वंस्तानि क्रियन्ते स्म। भारतं लुण्ठितुम् आगच्छतः बाह्यानाक्रमणकारिणः निरोद्धुं न कोऽपि शासकः सज्जः आसीत्।

हिन्दी अनुवाद—

महाराज सूरजमल्ल का जन्म वसन्त पंचमी (13 फरवरी के दिन) सन् 1707 ई. वर्ष में हुआ था। वह महाराज बदनसिंह के बड़े पुत्र और उत्तराधिकारी थे। सूरजमल्ल का एक दूसरा नाम सुजानसिंह था। अठारहवीं शताब्दी के भारत के नेताओं में सूरजमल्ल प्रमुख थे। उनका जन्म तब हुआ था, जब भारत देश की राजनीति डोलती हुई (अस्थिर) थी और भारत विनाशकारी शक्तियों की भुजाओं के बन्धन में जकड़ा हुआ था। नादिरशाह, अहमदशाह अब्दाली जैसे पापियो के द्वारा उत्तर—भारत में अत्यधिक मात्रा में मानव—वध और गायों का वध किया जा रहा था, तीर्थ और मन्दिरों का विनाश किया जा रहा था। भारत को लूटने के लिए आये हुए बाहरी आक्रमणकारियों को रोकने के लिए कोई भी शासक तैयार नहीं था।

8. **अधोलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत—**

जाट—जातौ सूरजमल्लः तदेव स्थानं धत्ते यत्खलु स्थानं विदेशीयेषु प्लेटो—नेपोलियन—लूथर इत्यादीनामस्ति कश्चिदेकः लेखकस्तु तं 'जाट—प्लेटो' इति विरुदेन भूषितवानेव। हिन्दु—इतिहासज्ञाः तं 18 शताब्दस्य 'कनिष्कः' इति मुस्लिमाश्त तं 'अन्तिमः प्रतापी हिन्दु—नरेशः' इति घोषितवन्तः। औपचारिक—शिक्षा—रहितोऽपि सूरजमल्लः वस्तुतः समकालीनेषु वीरेषु भीमः, नीतिज्ञेषु .ष्णाः, अर्थशास्त्रज्ञेषु च कौटिल्यः आसीत् इति मन्यते। सैय्यद गुलाम अली नकवी स्वीये 'इमादुस्सादात' इत्याख्ये ग्रन्थे लिखति यत् राजनीतेः, राजस्वस्य, नागरिक—न्यायस्य च प्रबन्ध—नैपुण्ये आसफजाह—बहादुर—निजामं विहाय हिन्दुस्थाने तत्समये नैकोऽपि कश्चिद् तत्तुल्यः आसीत्।

हिन्दी अनुवाद—

जाट—जाति में सूरजमल्ल वही स्थान धारण करते हैं, जो स्थान विदेशियों मे प्लेटो, नेपोलियन, लूथर आदि का है। किसी एक लेखक ने तो उनको 'जाट—प्लेटो' इस घोषणा से सुशोभित किया है। हिन्दू इतिहासकारों ने उनको 18वीं शताब्दी का 'कनिष्क' और मुसलमानों ने उनको 'अन्तिम प्रतापी हिन्दू—राजा' इस रूप में घोषित किया। औपचारिक शिक्षा से रहित होने पर सूरजमल्ल वास्तव में समकालीन वीरों में भीम, नीतिज्ञों में .ष्ण और अर्थशास्त्रज्ञों में कौटिल्य (चाणक्य) थे, ऐसा मानते हैं। सैय्यद गुलाम अली नकवी अपने 'इमादुस्सादात' नामक निपुणता में आसफजाह बहादुर निजाम को छोड़कर हिन्दुस्तान में उस समय एक भी कोई उसके समान नहीं था।

9. अधोलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत–

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यानि अनवद्यानि कर्मणि तानि सेवित्यानि नो इतराणि । यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयादेयम् श्रिया देयम्। हिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। एषः आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्।

हिन्दु अनुवाद–

माता देवता है, पिता देवता है। गुरू देवता है अतिथि देवता है (यह मानकर उनकी उपासना करनी चाहिए) जो भी प्रशंसनीय कर्म है, उन्हीं का सेवन करना चाहिए, अन्य का नहीं। जो हमारे श्रेष्ठ आचरण हैं, उनको ही तुम्हारे द्वारा अपनाना चाहिए, अन्य को नहीं। श्रद्धापूर्वक (दान) देना चाहिए। अश्रद्धा से कभी नहीं देना चहिए। पारलौकिक–भय से देना चाहिए। मित्रादि कार्य मानकर देना चाहिए। यही आदेश है। यही उपदेश है। यही वेदों का रहस्य (सार) है। यही ईश्वर वचन अर्थात् अनुशासन है। इसी प्रकार उपासना करनी चाहिए।

10. अधोलिखितस्य पठितगद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत–

मेवाड़ाधिपतिः महाराणाप्रतापः अरण्ये स्वसहचरेण सह एकस्यां शिलायाम् उपविष्टः वर्तते। असौ प्राणैः अपि स्वदेशं रक्षितुम् इच्छति। साधनाभावात् किमपि कर्तुम् असमर्थः स मनसि किचित् विचारयन्नस्ति।

प्रतापः– अरे धिक माम्। यदि अहं मातृभूमिं रक्षितुं न शक्नोमि किम् अत्र वासेन मे प्रयोजनम्। दीर्घ निःश्वसिति। (ततः प्रविशति कश्चन राजपुत्रः सर्वदारः)

सर्वदारः– (राजोचितं प्रणम्य) विजयतां विजयतां महाराजः।

प्रतापः– (दीर्ध निःश्वास मुखम् उन्नमय्य च) धिक। विजय ध्वनिं .त्वा त्वम् किम् एवं मां लज्जयते भ्रातः।

सर्वदारः– प्राणाधार। किम् इदं भवान वदति ? स्वाधीनतायै सर्वे किम् अपि सोढम् भवतः सदा विजयः एव भविष्यति।

हिन्दी अनुवाद–

मेवाड़ के स्वामी महाराणा प्रताप वन में अपने साथी के साथ एक पर्वत–शिलाखण्ड पर बैठे हुए हैं। यह (प्रताप) प्राण देकर भी अपने देश की रक्षा करना चाहता है। साधनों के अभाव में कुछ भी करने में असमर्थ वह मन में विचार करता है।

प्रताप– अरे मुझको धिक्कार है। यदि मैं अपनी मातृभूमि की रक्षा नहीं कर सकता हूँ तो मेरा यहाँ निवास करने से कोई लाभ नहीं है, कहीं पर जाकर मैं अपने प्राणों का त्याग क्यों नहीं कर रहा हूँ ? (लम्बी श्वास छोड़ते है) तत्पश्चात कोई राजपूत वीर प्रवेश करता है।

सर्वदार– राजा के योग्य प्रणाम करके महाराज की विजय हो विजय हो।

प्रताप– लम्बीं सांस छोड़कर और मुख उठाकर हाय धिक्कार है। हे भाई! विजय ध्वनि करके क्या तुम भी मुझे लज्जित कर रहे हो ?

सरदार– हे प्राणा धार। (हम सभी के प्राणों के आधार स्वरूप प्रताप) आप यह क्या कह रहे हो? अपने धर्म के लिए आपने सभी कुछ किया है। स्वतंत्रता के लिए सभी कुछ सहन किया है। आपकी सदा विजय ही होगी।

प्रश्न–अधोलिखितस्य पठितपद्यांशस्य हिन्दीभाषायाम् अनुवादं लिखत–

(1) गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गासपद मार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरूषः सुरत्वात्।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने मरूप्रदेश के अपूर्व सौन्दर्य एवं समृद्धि का वर्णन करते हुए कहा है कि–

व्याख्याः– देवता जहाँ गीत गाते हैं वे मनुष्य धन्य हैं जो स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति का मार्गस्वरूप भारतदेश में देवता रूप से अथवा स्वर्ग से भी आकर पुनः उत्पन्न होते हैं।

(2) सम्प्राप्य भारते जन्म सत्कर्मसु पराङ्मुखः।
पीयूष–कलशं हित्वा विषभाण्डमुपाश्रितः।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'स्वराष्ट्र–गौरवम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने बताया गया है कि जो मनुष्य पवित्र भारत देश में जन्म लेकर भी सत्कर्म नहीं करता है, वह मानो अमृत को छोड़कर विष के पात्र को ग्रहण करने वाला होता है। कवि कहता है कि

व्याख्याः– भारत देश में जन्म प्राप्त करके भी जो मनुष्य सत्कर्मों से विमुख होता है वह अमृत के घड़े को छोड़कर जहर के पात्र को ग्रहण करने वाला होता है।

शेखावाटी मिशन–100

(3) एतद्देश–प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत किया गया है। यह पद्य मूलतः 'मनुस्मृति' से संकलित है। इस पद्य में भारत देश की महिमा एवं गौरव को दर्शाते हुए कहा गया है कि संसार के सभी मनुष्यों को भरत के श्रेष्ठ लोगों से अपने– अपने गुण–धर्म की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

व्याख्याः– इस भारत देश में उत्पन्न हुए श्रेष्ठजनों के पास से पृथ्वी पर सभी मनुष्यों को अपने–अपने अनुसार गुण–व्यवहार आदि की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

(4) अपि स्वर्णमयी लड्का न मे लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'स्वराष्ट्र–गौरवम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में श्रीराम के माध्यम से माता और मातृभूमि के महत्व को दर्शाया गया है।

व्याख्याः– हे लक्ष्मण। सोने से निर्मित लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक श्रेष्ठ होती है।

(5) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।

मूढ़ै पाषाण–खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधियते।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में पृथ्वी पर जल, अन्न एवं सुभाषित इन तीनों को ही रत्न बताते हुए कहा गया है कि

व्याख्याः– पृथ्वी पर तीन रत्न हैं – जल, अन्न ओर सुभाषित। लेकिन मूर्ख लोगों के द्वारा पत्थरों के टुकड़ों में 'रत्न' नाम दिया जाता है।

(6) अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में विद्या और धन का अर्जन करते हुए हमेशा धर्माचरण करने की प्रेरणा दी गई है–

व्याख्याः– बुद्धिमान व्यक्ति स्वयं को अजर एवं अमर के समान मानकर विद्या एवं धन की प्राप्ति का विचार करना चाहिए तथा मृत्यु ने केश पकड़ रखे हैं अर्थात् मृत्यु निकट ही है, ऐसा मानकर धर्म का आचरण भी करना चाहिए।

(7) विद्या विवादाय धनंमदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।

खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में विद्या, धन एवं शक्ति का दुर्जन और सज्जनों द्वारा उपयोग किये जाने के अन्तर को बतलाया गया है।

व्याख्याः– दुष्ट व्यक्ति की विद्या विवाद करने के लिए धन घमण्ड के दिए तथा शक्ति दूसरों को पीड़ित करने के लिए होती है। किन्तु सज्जन की ये सब विपरीत होती है– सज्जन की विद्या ज्ञान के लिए धन दान के लिए तथा शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

(8) परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।

वर्जयेतादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में पीठ पीछे कार्य को बिगाड़ने वाला और सामने मधुर बोलने वाले मित्र का त्याग कर देने की प्रेरणा देते हुए कहा गया है कि–

व्याख्याः– पीठ पीछे काम को बिगाड़नपे वाले तथा सामने मधुर बोलने वाले, जिसके ऊपर–ऊपर(मुख भाग पर) दूध लगा हो, ऐसे जहर से भरे घड़े के समान मित्र को त्याग देना चाहिए।

(9) अनुकुले विधौ देयं यतः पूरयिता हरिः।

प्रतिकूले विधौ देयं यतः सर्वं हरिष्यति।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में भाग्य अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल हो, सदैव दान देने की प्रेरणा देते हुए कहा गया है कि–

व्याख्याः– भाग्य के अनुकूल होने पर दान देना चाहिए, क्योंकि देने वाला ईश्वर है। भाग्य के विपरीत होने पर भी दान देना चाहिए, क्योंकि वह ईश्वर वब कुछ छीन लेगा, अर्थात भाग्य अनुकूल हो या प्रतिकूल हो दान देना चाहिए, क्योंकि ईश्वर ही देने वाला और छीनने वाला है।

शेखावाटी मिशन–100

(10) अहिंसा परमो धर्मस्तथाऽहिंसा परं तपः।
अहिंसा परमं सत्यं यतो धर्मः प्रर्वतते।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में अहिंसा धर्म के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि–

व्याख्याः– अहिंसा सर्वोच्चा धर्म है, अहिंसा सर्वोच्च तपस्या है तथा अहिंसा ही सर्वोच्च सत्य है क्योंकि अहिंसा से ही धर्म चलता है। अर्थात् मन, वचन एवं कर्म से प्राणियों को पीड़ित न करना ही सर्वश्रेष्ठ धर्म, तप एवं सत्य है।

(11) धन–धान्य प्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में धन,–धान्यादि के व्यवहार में लज्जा का त्याग करने की प्रेरणा देते हुए कहा गया है कि–

व्याख्याः– धन–धान्यादि के प्रयोग में और विद्या का संग्रह करने में तथा भोजन एवं व्यवहार में लज्जारहित होकर सुखी होना चाहिए। अर्थात् इन सभी में जो लज्जा नहीं करता है, वह मनुष्य सुखी रहता है।

(12) पात्रापात्र – विवेकोऽस्ति धेनुपन्नगयोः इव।
तृणात्संजायते क्षीरं क्षीरात् संजायते विषम्।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषित–रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में पात्र और अपात्र के भेद को गाय और सर्प के समान बतलाते हुए कहा गया है कि–

व्याख्याः– पात्र और अपात्र का भेद गाय और सर्प के समान होता है। गाय को घास खिलाने से उससे दूध उत्पन्न होता है तथा सर्प को दूध पिलाने से उससे जहर उत्पन्न होता है।

(13) मरूः सुवर्णो नहि येन दृष्टः किं तेन दृष्टं कुहचित् सुदृश्यम।
स्फुटं मरौ भान्ति सुमेरूश्रृड़गाः शिलासु कृष्णासु न तेहि मृग्याः।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने मरू–प्रदेश के सौन्दर्य और विभिन्न विशेषताओं का वर्णन किया है–

व्याख्याः– सुन्दर वर्ण वाला (स्वर्ण रूप) मरू–प्रदेश जिसने नहीं देखा, उसके द्वारा कहाँ पर दर्शनीय क्या देखा गया? अर्थात् कहीं पर भी दर्शनीय स्थल नहीं देखा गया। जो सुमेरू पर्वत के शिखर मरू–प्रदेश मे स्पष्ट सुशोभित होते हैं, उन्हें काली शिलाओं में नहीं खोजना चाहिए।

(14) वर्षागमे चारूमरूं विहाय क्वान्यत्र कस्यापि रमेत चितम्।
सरः सु वर्षासमयेऽपि यस्मिन् शरत्–प्रसन्नं सलिलं चकास्ति।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने वर्षाकालीन मरूप्रदेश मे सौन्दर्य का रमणीय वर्णन करते हुए कहा है कि–

व्याख्याः– वर्षा–काल में सुन्दर मरूस्थल को छोड़कर दूसरी जगह कहाँ किसका मन रमण कर सकता है? अर्थात् किसी का भी नहीं। जिस मरूस्थल में वर्षा के समय में भी सरोवरों में शरद्ऋतु के समान निर्मल जल सुशोभित होता है।

(15) गावः प्रसन्नाः मनुजाः प्रसन्नाः देवाः प्रसन्नाः व्रतदान यज्ञै।
किं नाम तन्न मरौ समृद्धः विद्या–समृद्धो भवता विधेयः।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने मरूप्रदेश के अपूर्व सौन्दर्य एवं समृद्धि का वर्णन का वर्णन करते हुए कहा है कि–

व्याख्याः– मरूस्थल में गायें प्रसन्न हैं, मनुष्य प्रसन्न हैं और व्रत, दान एवं यज्ञों से देवता भी प्रसन्न हैं। ऐसा क्या है, जिससे मरूप्रदेश सम्पन्न नहीं हैं, अर्थात् सभी से सम्पन्न है। अतः इस मरूप्रदेश को आपके द्वारा विद्या से सम्पन्न करना चाहिए।

(16) रम्ये क्वचित् सैकतःवप्र–सानौ सुकोमले भास्वति हैमवर्णे।
प्रातः प्रदोषे च सुखं स्थितानां केषां न चेतांसि विकासवन्ति।।

प्रसंगः– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य–पुस्तक 'स्पन्दना' के 'मरूसौन्दर्यम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस पद्य में स्वर्णमय मरू–प्रदेश के सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्याः– कहीं पर रमणीय, सुकोमल, कान्तिमान्, स्वर्णिम मिट्टी के टीलों अथवा धोरों की चोटी पर सुबह और रात में सुखपूर्वक बैठे हुए किन लोगों के चित प्रफुल्लित नहीं होते हैं? अर्थात् सभी के मन प्रसन्न होते हैं।

शेखावाटी मिशन–100

1. अधोलिखितापठितान् गद्यांशान् पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उतराणि यथानिर्देशं लिखत–

परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते। ''सर्वः स्वार्थं समीहते'' इत्यपि कस्यचित् कवेः उक्तिः अस्ति।

स्वार्थाय सर्वेऽपि प्राणिनः जीवन्ति। किन्तु यस्य जीवनम् अन्येभ्यः अस्ति, अपरेषां प्राणिनां सुखाय यः प्रयतते, कष्टं सहते च वस्तुतः तस्यैव जीवनं सार्थकम् अस्ति। पश्य, गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति, अतः जनाः ''मातर'' इति वदन्ति। नदी अपि स्वजलं स्व्यं न पिवति, अन्येषां प्राणिनां कृते ददाति। मेघान् पश्यत् स्वजलं सर्वेभ्यः वितरन्ति। पुष्पाणि सर्वेभ्यः सुगन्धं वितरन्ति। वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति। मातृसमा उपकारिणी का विद्यते जगते? अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

उतर – परोपकारः

प्रश्न 2. सर्वं किं समीहन्ते?

उतर – सर्वं स्वार्थ समीहन्ते।

प्रश्न 3. काः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति?

उतर – गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।

प्रश्न 4. किं नाम परोपकारः ?

उतर – परेषाम् उपकारः नाम परोपकारः।

प्रश्न 5. किं वरं विद्यते?

उतर – स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।

2. अस्मिन् संसारे असंख्याः भाषा सन्ति। तासु भाषासु संस्कृत भाषा सर्वोत्तमा विद्यते। संस्कृता परिष्कृता दोषरहिता भाषा एव संस्कृत भाषा कथ्यते। इयमेव भाषा देवभाषा, गीर्वाणगीः, सुरवाणी इत्यादिभिः शब्दैः संबोध्यते। एतानि नामानि एव अस्याः भाषायाः महत्वं सूचयन्ति।

संस्कृतभाषा जगतः सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। सर्वभाषाणां मूलरूप ज्ञानाय एतस्या आवश्यकता भवति। यादृशं महत् साहित्यं संस्कृत भाषायाः अस्ति तादृशं अन्यासां भाषाणाम् नास्ति। अस्यामेव भाषायां ब्राह्मणग्रन्थाः आरण्यकाः आध्यात्मिकविषयप्रतिपादिका उपनिषदः, वेदादयश्च सन्ति। आदिकाव्यं रामायणं वीरकाव्यं महाभारतमपि संस्कृतस्य गौरवं वर्धयतः। अनयोः ग्रन्थयोः विषयं गृहीत्वा एवं विशालस्य (संस्कृत) साहित्यस्य रचना संजाता।

यथानिर्देश प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

प्रश्न 1. अस्यं गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

उतर – संस्कृतभाषायाः महत्वम्।

प्रश्न 2. सर्वभाषाणां मूलरूपं ज्ञानाय कस्याः आवश्यकता भवति?

उतर – संस्कृतभाषायाः।

प्रश्न 3. सर्वोत्तमा भाषा का विद्यते?

उतर – संस्कृतभाषा।

प्रश्न 4. संस्कृतभाषा कैः शब्दैः संबोध्यते?

उतर – संस्कृतभाषा देवभाषा, गीर्वाणगीः, सुरवाणी, इत्यादिभिः शब्दैः संबोध्यते।

प्रश्न 5. वीरकाव्यं किम् कथ्यते?

उतर – वीरकाव्यं महाभारतं कथ्यते।

3. मानव जीवने श्रमस्य महत्वं सर्वे जनाः जानन्ति। मानवः श्रममाश्रित्यैव सुखसमृद्धिं प्राप्नोति। जनः सुखं वाञ्छति मनोरथं पूरयितुमभिलषति, जीवने समुन्नतिं कांक्षते, तत्सर्वस्य साधनं श्रममेव वर्तते। श्रम एव मानवस्य स्वाभिमानं शारीरिक शक्तिं च प्रसारयति, सर्वेषु कार्येषु तस्य दक्षतामापादयति। अत एव श्रमेणेव सर्वत्र साफल्यं मिलति।

जनैः सदा सः श्रमः कर्तत्व्यः यतः सम्पतेरूद्भवो भवति, यतोहि व्यर्थं परिश्रमं कुर्वन् नरः पापभाक् भवति। प्रज्ञाः तुर्येऽपि वयसि परमं श्रमं न त्यजेयुः। यस्मिन् देशे जनाः पूर्णश्रम परायणाः भवन्ति तत्र वसुन्धराः धर्नेर्धान्यः पूर्णा विराजते। धिषणा श्रम संयोगः सर्वकार्येषु सिद्धिः भवति।

अश्रमाधिषणा व्यर्था भवति तथा च अधिषणः श्रमः व्यर्थः भवति। अतएव स्वस्थ लोकस्य चोन्त्तये सदैव श्रमः कृर्तव्यः।

यथानिर्देशं प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत।

उतर – श्रमस्य महत्वम्

प्रश्न 2. मानवजीवने कस्य महत्वं सर्वे जनाः जानन्ति?

उतर – श्रमस्य

प्रश्न 3. मानवः कथं सुखसमृद्धिं प्राप्नोति?

उतर – मानवः श्रममाश्रित्यमेव सुखसमृद्धिं प्राप्नोति।

प्रश्न 4. केनैव सर्वत्र साफल्यं मिलति?

उतर – श्रमेणेव।

प्रश्न 5. किम् कुर्वन् नरः पापभाक् भवति?

उतर – व्यर्थं परिश्रमं कुर्वन नरः पापभाक् भवति।

प्रश्न– 4

(1) भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुरस्य दशम्याः कक्षायः छात्र रमेशः अस्ति। स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्य आवश्यक कार्यवशात् पंचदिनस्य अवकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखत।

अथवा

भवान् महेशः स्वकीयं पितरम् प्रति स्वाध्यायविषये अधोलिखितपत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूरयित्वा लिखतः–

सम्यक्, अस्माकम्, भृशम्, विहाय, सादरम्, अन्यत्, न्यूनताम्, मातरम्

जामनगरतः

दिनाङ्कः 9 मई 2021

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु....(i) .... प्रणतयः सन्तु। भवतां पत्रमाधिगतम्। समाचारान् अधीत्य मे मनः (ii) ... मोदतेतराम्। जूनमासे .... (iii).... परीक्षा सम्पत्स्यते। समप्रति अध्ययनकर्म .... (iv).... चलति। संस्कृत व्याकरणं.... (v).... सर्वेषु विषयेषु दक्षतामापन्न पन्नोऽसि। व्याकरणस्यापि .... (vi). ... शीघ्रमेव अपनेष्यामि....(vii)....प्रति में सादरं प्रणतय।। .... (viii)....कुशलम्

भवत्कः सुतः

महेशः

उत्तरः– (i) सादरम् (ii) भृशम् (iii) अस्माकं (iv) सम्यक्
(v) विहाय (vi) न्यूनतां (vii) मातरं (viii)अनयत्

अथवा

उत्तर–

सेवायाम्
श्रीमन्तः प्रधानाचार्यमहोदयाः
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जयपुरम्।
विषय :– पंचदिनस्य अवकाशार्थं प्रार्थना–पत्रम्।
महोदयाः

उपर्युक्त विषयान्तर्गते निवेदनम् अस्ति यत् मम गृहे अत्यावश्यकं कार्यं वर्तते। अतः अहं विद्यालयम् आगन्तुं समर्थः नास्मि। प्रार्थना अस्ति यत् 22–05–2021 तः 26–05–2021 दिनांक पर्यन्तं पंचदिनस्य अवकाशं स्वकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति।

दिनांक
21–05–2021

भवताम् आज्ञाकारी शिष्यः
रमेशः
कक्षा – दशमी

(2) भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोमपुरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः नरेन्द्रः अस्ति। स्व विद्यालयस्य प्रधानाचार्याय अस्वास्थ्य कारणेन अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रं लिखतु।

अथवा

भवान् गोविन्दः। स्कीयं मित्रं राजेन्द्रं प्रति स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सव विषये अधोलिखित पत्रं मंजूषापदसहायतया पूरयित्वा लिखतु।

परिवारे, वार्षिकोत्सवस्य, पत्रोत्तरं, स्वकरकमलेन, कुशलताम्, विविधाः, स्वीकृतान्, पुरस्कारम्।

शैलपुरतः

दिनांकः 21.05.2021

प्रियमित्रं राजेन्द्र
नमस्ते।
अत्र अहं कुशलं भवतः (i) .... कामये। फरवरी मासे पन्चमे दिनांके मम विद्यालये (ii) .... आयोजनम् अभवत्। अस्मिन् दिवसे (iii).................................. प्रतियोगिताः अभवन्। अहमपि धावन प्रतियोगितायां, वाद–विवाद प्रतियोगितायां च भाग (iv)..................... पुरस्कार वितरण समारोहे अस्माकं क्षेत्रस्य विधायक महोदयः (v)............. पुरस्करा वितरणं कृतवान। अहमपि (vi)......... प्राप्तवान्। अस्तु (vii) .... सर्वेभयः यथायोग्यं नमस्काराः (viii).........................शीघ्रमेव प्रेषणीयम्।

भवतः मित्रम्

गोविन्दः

उतरः– (i) कुशलताम् (ii) वार्षिकोत्सवस्य (iii) विविधाः (iv) स्वीकृतवान् (v) स्वकरकमनेन (vi) पुरस्कारं (vii) परिवारे (viii) पत्रोतरं।

अथवा

शेखावाटी मिशन–100

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्य महोदयाः

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः

सोमपुरम्।

विषयः— अवकाशाय प्रार्थना—पत्रम्।

महोदयः

सविनयं निवेदनमस्ति यद्यहं विगतदिवसात् ज्वरपीड़ितोऽस्मि। अतः अस्वस्थता कारणादहं विद्यालये आगल्तुं न शक्नोमि। अतः प्रार्थना अस्ति यत् दिनांक 20—04—2021 तः 22—04—2021 पर्यन्तं दिनत्रयसय अवकाशं स्वकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

दिनांकः— 20—04—2021 भवदाज्ञाकारी शिष्यः

नरेन्द्रः

कक्षा— दशमी

(3) भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेरस्य दशमकक्षायाः विद्यार्थी सुरेशः। भवतः पिता अतीव निर्धनः अस्ति। स्वस्य प्रधानाचार्याय शुल्कमुक्त्यर्थम एकं प्रार्थना पत्रं लिखतु।

अथवा

पितरं प्रति अधोलिखित पत्रं मन्जूषायां प्रदत पद सहायतया पूरयित्वा पुनः उत्र पुस्तिकायां लिखतु।

परीक्षा, स्वास्थ्यमपि, प्रणतिः पितृचरणेषु, सस्नेहमाशिषः, शीघ्रमेव, वृत्तं, स्नेहापूरितं

उत्तरः—

जयपुरतः

परमश्रध्देषु. .... दिनांक 16—12—2021

सादर प्रणतिः।

अत्र कुशलं तथास्तु।

भवदीयं .... पत्रं मया अधैव प्राप्तम्। पत्रं पठित्वा गृहस्य सर्वमपि .... ज्ञातवान् अधुना मम अद्धवार्षिकी ....प्रचलति। अतोऽहमध्ययने दत्तवित्तोऽस्मि। ....समीचीनम्। परीक्षानन्तरम् ....ग्रहं आगमिष्यामि।

पूज्यायाः मातुश्चरणयोः मम .... कथनीया, भगिन्यै गरिमायै ....

भवदाज्ञाकारी पुत्रः

गौरवः

उत्तरः— (i) पितृचरणेषु (ii) स्नेहापूरितं (iii) वृतं (iv) परीक्षा
(v) स्वास्थ्यमपि (vi) शीघ्रमेव (vii) प्रणतिः (viii) सस्नेहमाशिषः।

अथवा

सेवायाम्,

श्रीमन्तः प्रधानाचार्यः महोदया,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयः,

अजमेरम्।

विषयः— शुल्कमुक्त्यर्थम् प्रार्थना—पत्रम्।

महोदयाः,

निवेदनमस्ति यदहं भवतां विद्यालये दशम्यां कक्षायां पठामि। मम पिता अतीव निर्धनः अतः मम परिवारस्य आर्थिक दशा समीचीना नास्ति। निर्धनता— कारणात् मम पिता मदीयं विद्यालय शुल्क प्रदानार्थं सक्षमो नास्ति, किन्तु मम अध्ययनस्य रूचिः वर्तते। अत एव प्रार्थना वर्तते यन्मम निर्धनतां स्वाध्ययने च रूचिं विलोक्य शिक्षणशुल्कात सर्वथामुक्तिं प्रदास्यन्ति श्रीमन्तः।

दिनांकः 15—04—2021 भवदाज्ञाकारी शिष्यः

सुरेशः

कक्षा — दशमी

शेखावाटी मिशन—100

प्रश्नः– 5

(1) मन्जूषायाः उपयुक्तपदानि गृहीत्वा पितापुत्रयोः मध्यें योगदिवस विषये संवादं पूरयतु।

कुर्वन्ति, आगच्छ, जूनमासस्य, कार्यक्रमः, शक्नोमि, अस्माकम्, योगदिवसे, अन्तराष्ट्रियदिवसः

पुत्रः– भोः पितः!........................21 दिनांके कः दिवसः भवति?

पिताः– अरे! तस्मिन् दिने तु ....भवति।

पुत्रः– योगदिवसे के ....भवन्ति?

पिताः– ....विश्वेजना प्रणायाम व्यायामं च कुर्वन्ति।

पुत्रः– योगेन...................... स्वास्थ्यं सम्यक् भवति वा?

पिताः– आम्। ये योगं .... ते रूग्णाः न भवन्ति।

पुत्रः– तर्हि अहम् अपि योगं कर्तुं .... वा?

पिताः– किमर्थं न, ...आवां योगं करवाव।

उत्तरः–	(i) जूनमासस्य	(ii) अन्तराष्ट्रिययोगविसः	(iii) कार्यक्रमः	(iv) योगदिवसे
	(v) अस्माकं	(vi) कुर्वन्ति	(vii) शक्नोमि	(viii) आगच्छ।

(2) मंजूषातः उचितानि पदानि गृहीत्वा ' धूम्रपान–निवारणाय' अति विषये गुरूशिष्ययोः संवादं पूरयत–

गन्तुम्, अस्य, तुभ्यं धुम्रपानं, स्वास्थ्य, प्रेरणीयाः मया, दुर्व्यसनस्य

सोहनः– गुरूवर! अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्रा...............कुर्वन्ति?

गुरूः– वत्स! धूम्रपनं........................विनाशकमस्ति।

सोहनः– गुरूवरं! कोऽस्य...................... निवारणोपायः?

गुरूः– पुत्र! जन–जागर्तिरेव........................ दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।

सोहनः– गुरूवर! ....किं करणीयम्?

गुरूः– त्वया छात्राः .... यत् अस्माभिः धूम्रपानं न करणीयम्।

सोहनः– गुरूवर! एवमेव करोमि। अधुना अहं .... इच्छामि।

गुरूः– वत्स! महत्त्वपूर्ण विषयोपरि वार्तां कर्तुं.......................... धन्यवादं ददामि।

उत्तरः–	(i) धूम्रपानं	(ii) स्वास्थ्य	(iii) दुर्व्यसनस्य	(iv) अस्य
	(v) मया	(vi) प्रेरणीयाः	(vii) गन्तुम्	(viii) तुभ्यं

(3) मंजूषातः उचितानि पदानि चित्वा अधोलिखितं 'विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः' इति संवादं पूरयत–

सज्जी, स्थानीयः, सभागृहस्य, सिद्धता, आनेष्यति, मालार्पणम्, स्वयमेव, स्यात्।

आचार्यः– श्वः 'कोमुदीमहोत्सवः' इति नाम्ना वाषिकोत्सवः भविष्यति खलु। तन्निमित्तं .... जाता किम्? भवान् वदतु सुरेशः! कः कः किं किं करिष्यति इति?

सुरेशः– अशोकः, कमलेशः, महेशः च...........................अंलकारं करिष्यन्ति। इन्द्रेशः आत्मारामः च उपवेशनव्यवस्थां द्रक्ष्यतः।

आचार्यः– पूजनसामग्रीं के .... करिष्यन्ति?

सुरेशः– कमलेशः इत्यादयः करिष्यन्ति।

आचार्यः– मुख्यातिथिं कः..................................?

सुरेशः– मुख्यातिथिं अहमेव आनेष्यामि।

आचार्यः– अध्यक्षमहोदय............आगमिष्यामि उत् कोऽपि तम् आनेष्यातिः?

सुरेशः– अध्यक्षमहोदयः ....अस्ति. अतः स्वयमेव आगमिष्यति।

आचार्यः– मालार्पणम् कः करिष्यति?

सुरेशः– ....भवान् एव करिष्यति।

आचार्यः– श्वः कार्यक्रमः व्यवस्थितं यथा..................... तथा त्वं परिशीलयिष्यसि ननु?

उत्तरः–	(i) सिद्धता	(ii) सभागृहस्य	(iii) सज्जी	(iv) आनेष्यति
	(v) स्वयमेव	(vi) स्थानीय	(vii) मालार्पणम्	(viii) स्यात्

निबंधात्मकप्रश्नम्–

1. सूरजमल्लस्य गुणान् वर्णयन्तु ?

उत्तरम्– मल्लेषु मल्लः सूरजमल्लः शरीर–सौण्ठवस्य, सौन्दर्यस्य, सरलतायाः, चारित्रिक–दृढ़तायाः, धार्मिकतायाः, वीरतायाः, करुणायाः, त्यागस्य, बलिदानस्य, शरणागत–रक्षणस्य, प्रजावात्सल्यस्य, राष्ट्रवादस्य, सर्वपन्थसमादरस्य च साक्षात् प्रतिमूर्तिरासीत्। सूरजमल्लः स्वकालखण्डस्य अत्यन्तं दुर्धर्षः, अतिशयेन तेजस्वी, नितान्तं नीतिनिपुणः अद्वितीयश्य योद्धा आसीत्।

आदर्श प्रश्न पत्र–1
माध्यमिक परीक्षा 2021
कक्षा–10
विषय–संस्कृत

समयः 3:15 घण्टे (सपादहोरात्रयम्) पूर्णांक – 80

परीक्षार्थिभ्यः सामान्य निर्देशाः

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं प्रश्नपत्रोपरि नामांक अनिवार्यतः लेख्य।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. प्रत्येकस्य प्रश्नस्योत्तरं उत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
4. प्रत्येकस्य प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखिततव्यम्।
5. प्रश्नानां अंक भाराणि निम्नानुसाराणि सन्ति।

खण्ड–अ	1 (1 से 8) 2 (11–20)	1	20
खण्ड–ब	12 से 19	2	16
खण्ड–स	20 से 23	4	16
खण्ड–द	24	5	10
खण्ड–य	25 से 27	6	18

खण्ड–अ

प्र.1. अधोलिखित प्रश्नानां उचित क्रमाक्षरं स्व उत्तरपुस्तिकायां लिखत– 10

1. "स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" इति कथनं कस्य कृते अस्ति ?
   (अ) भारतदेशस्य अग्रजन्मनः (ब) नेपालदेशस्य अग्रजन्मनः
   (स) आंग्लदेशस्य अग्रजन्मनः (द) मंगोलदेशस्य अग्रजन्मनः
2. काव्येषु किं रम्यम् उच्यते ?
   (अ) एकांकी (ब) नाटकं (स) पद्य (द) खंडकाव्यं
3. प्रतापस्य राज्याभिषेकः अभवत्–
   (अ) चावण्डे (ब) गोगुन्दा ग्रामे (स) उदयपुरे (द) नन्दग्रामे
4. केशवानन्द सचेष्टः आसीत्–
   (अ) सतां प्रति (ब) राजनीतिं प्रति
   (स) प्रथानां निवारणाय (द) मरुप्रदेशे व्याप्तानां कुप्रथानांनिवारणाय
5. सर्वे प्राणिनः केन तुष्यन्ति–
   (अ) प्रियवाक्यप्रदानेन (ब) अप्रियवाक्यप्रदानेन (स) धनप्रदानेन (द) दण्डप्रदानेन
6. किं महत्पापं वर्तते–
   (अ) आत्मधनम् (ब) आत्मेच्छा (ब) आत्महननम् (द) आत्मप्रशंसा
7. शुष्कोऽपि नित्यं सरसः कः प्रदेशः–
   (अ) मरुप्रदेशः (ब) भारतप्रदेशः (स) मध्यप्रदेशः (द) उत्तरप्रदेशः
8. नायकेषु अन्यतमः कः आसीत्–
   (अ) प्रतापः (ब) सूरजमल्लः (स) केशवानन्दः (द) पृथ्वीराजः
9. अस्माभिः कानि सेवितव्यानि –
   (अ) वद्यानि कर्माणि (ब) धनानि (स) अनवद्यानि कर्माणि (द) सुचरितानि
10. पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति –
   (अ) द्वे (ब) त्रीणि (स) चत्वारि (द) दश

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न. संख्या 2–3 पर्यन्तं अधोलिखित सारण्याम् अंकानां स्थाने संस्कृत पदैः समयं लिखत –

प्र. 2 सः प्रातः ....विद्यालयं गच्छति (8:00) 1

प्र. 3 अहम् अपि सायंकाले .... क्रीडामि। (5:30) 1

प्रश्न संख्या 4–6 पर्यन्तं अधोलिखित रेखांकित शब्दं पुनः शुद्धं कृत्वा लिखत –

प्र. 4 सीता रामात् सह गच्छति। 1

प्र. 5 ग्रामस्य परितः क्षेत्राणि सन्ति। 1

प्र. 6 वृक्षेन पत्राणि पतन्ति। 1

प्रश्न सख्या 7–8 पर्यन्तं वाक्यानां वाच्य परिवर्तनं कुरूत –

प्र. 7 रामेण पुस्तकं पठ्यते। 1

प्र. 8 जनः ग्रामं गच्छति। 1

प्रश्न संख्या 9–11 पर्यन्तं मंजूषायां प्रदतैः अव्यय पदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु –

प्र. 9 यत्र गच्छति ....तिष्ठति। (अत्र, तत्र, सर्वत्र) 1

प्र. 10 अहम् .... अत्र पठामि। (अपि, इव, तत्र) 1

प्र. 11 गायकः .... गायति। (उच्चैः, नूनम, यत्) 1

खण्ड 'ब'

प्र. 12 अधोलिखित पदयोः सन्धि विच्छेदं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत–

(1) शिवोऽहम् (2) रामश्च 2

प्र. 13 अधोलिखित पदयोः संधिं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखत –

(1) नमः+ते (2) नमः+नमः 2

प्र. 14 अधोलिखित पदेषु समस्तपदानां विग्रहं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत –

(1) प्रतिवारं (2) निर्बलम् 2

प्र. 15 अधोलिखितानां विग्रह पदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखत –

(1) शक्तिम् अनतिक्रम्य (2) गुणस्य योग्यम् 2

प्र. 16 अधोलिखित रेखांकित पदेषु विभक्ति तत् कारणं च लिखत –

(1) गुरवे नमः। 1

(2) नगरात् बहि वनाः सन्ति। 1

प्र. 17 कोष्ठके प्रदत्त शब्देन उचित विभक्त्याः प्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत –

(1) .... बिना नैव सुखम्। (हरि) 1

(2) सः .... काणः अस्ति। (नेत्र) 1

प्र. 18 कोष्ठके प्रदत्त प्र.ति प्रत्ययाभ्यां पदं निर्माय वाक्यं पूरयत–

(1) सा .... अस्ति। (बुद्धि+मतुप्) 1

(2) प्रसन्नो बालकः ....। (शंक्+शानच्) 1

प्र. 19 अधोलिखित वाक्ययोः रेखांकित पदेषु प्र.ति प्रत्ययं च पृथक् .त्वा लिखत–

(1) पठन् गोपालः गच्छति। 1

(2) श्रीधरः धनी आसीत्। 1

खण्ड 'स'

प्र. 20 अधोलिखितेषु अष्टसु प्रश्नेषु कतिपयानि चत्वारिप्रश्नानां उत्तराणि संस्.त माध्यमेन लिखत– 4

(1) सर्वदमनस्य मणिबन्धे किम् आबद्धम् आसीत् ?

(2) प्रतापः कुत्र स्वराजधानीम् अकरोत् ?

(3) केशवानन्देन संस्.त–पाठशाला कुत्र स्थापिता ?

(4) कः परमो धर्मः ?

(5) कस्य विद्या ज्ञानाय भवति ?

(6) कः प्रतापाय धनं ददाति ?

(7) मरुदेशे के प्रसन्नाः सन्ति ?

(8) सूरजमल्लस्य पितुर्नामः किम् ?

शेखावाटी मिशन–100

प्र. 21 आधोलिखित गद्यांशस्य सप्रसंग हिन्दी भाषायां अनुवादं कुरुत– 4

मातृदेवो भव! पितृदेवो भव! आचार्यदेवो भव! अतिथिदेवो भव! यानि अनवद्यानि कर्याणि तानि सेवितव्यानि ना इतराणि। यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयादेयम्। श्रियादेयम्। हियादेयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। एषः आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्।

अथवा

प्रतापः– (परिचित–ध्वनिमिव आकर्ण्य सोत्साहम्) अरे सर्वदार! वृक्षम् आरुह्म दृश्यतां तु तावद कः अयं शब्दायते ?

सर्वदारः– (तथा निपुणं निरीक्षमाणः) महाराज! मेवाड़ मंत्री भामाशाहः इव कश्यन आगच्छन् प्रतीयते।

प्रतापः– हुँ, किम् उक्तम्। भामाशाहः ? तस्य कथम् इदं ज्ञातम् अभूत ? अस्तु तावत्, प्रतीक्षामहे तम्।(भामाशाहः धनराशिग्रन्थिम् आदाय आयाति।)

भामाशाहः– (प्रणम्य) अन्नदातः। सेवकं सन्त्यज्य क्व प्रस्थीयते श्रीमता ?

प्र. 22 अधोलिखित गद्यांशस्य हिन्दी भाषायां अनुवादं कुरुत– 4

स्वामिनो जीवनं सर्वपन्थसद्भावस्य निदर्शनमस्ति। अयं हि जाट–जातौ जातः पर सिक्खगुरोः नानकदेवस्य पुत्रेण श्रीचन्देन प्रवर्तिते उदासी–सम्प्रदाये दीक्षितः। गुरुगृन्थस्योत्तमः पाठीअभूत। एकादशवार्षिक–साधनतया ७०० पृष्ठात्मकस्य सिक्खेतिहासस्य लेखनं कारितवान्। विभाजनकालीने हिंसाचारे क्षतानां मुस्लिमबन्धूनां चिकित्सा कारिता।

अथवा

प्रथमा– वत्स एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च। अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि।

बालः– कुत्र? देह्येतत्। (इति हस्ते प्रसारयति)

द्वितीया– सुब्रते,न शक्य एष वाचामात्रेण विरमयितुम्। गच्छ त्वम् मदीये उटजे मार्कण्केयस्य ऋषि कुमारस्य वर्णचित्रितो मृत्तिकामयूरतिष्ठति, तमस्योपहर

प्रथम– तथा। (इतिनिष्क्रान्ताः)

प्र. 23 अधोलिखित पद्यांशस्य सप्रसंगं हिन्दी अनुवादं कुरुत– 4

अजरामरावत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।।

अथवा

वर्षागमे चारुमरुं विहाय क्वान्यत्र कस्यापि रमेत चित्तम्।
सरः सु वर्षासमयेऽपि यस्मिन् शरत्–प्रसन्नं सलिलं चकास्ति।

खण्ड 'द'

प्र. 24 अधोलिखितं अपठित गद्यांशं पठित्वा एवदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत–

इदं हि विज्ञान प्रधानं युगम्। "विशिष्ट ज्ञानं विज्ञानम्' इति कथ्यते। अस्यां शताब्धां सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दरीदृश्यते। अधुना नहि तादृशं किमपि कार्य यत्र विज्ञानस्य साहाय्यं नापेक्ष्यते। आवागमने, समाचार –प्रेषणे दूरदर्शने, सम्भाषणे, शिक्षणे, चिकित्सा क्षेत्रे, मनोंरजन कार्ये, अन्नोत्पादने वस्त्रनिर्माणे, कृषि कर्मणि तथैवान्युकार्य कालापेषु विज्ञानस्य प्रभावस्तदपेक्षा व सर्वत्रैवानुभूयते। सम्प्रति मानवः प्रकृति वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुक्ते। तथाहि वैज्ञानिकैरनेक आविष्काराः विहिताः मानवजातेः हिताहितम् अपश्यद्धिः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणु शक्तेः अस्त्रनिर्माणे एव विशेषतः उपयोगो विहितः। तदुत्पादितं च लोक ध्वंसकार्यम् अतिधोर निर्घृण च। अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणुशक्तेरपराधः पुरुषापराधः खलु एषः। अतोऽस्य मानवकल्याणार्थमेव प्रयोगः करणीय।

प्रश्नाः–

(1) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 1

(2) इदं कीदृशं युगं ? 1

(3) परमाणुशक्तेः कस्मिन् उपयोगो विहितः ? 1

(4) विज्ञानं किम् अस्ति ? 1

(5) कै आविष्काराः विहिताः ? 1

(6) कः पुरूषापराधः ? 1

(7) इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम्–अस्मिन् वाक्ये विशेषण–विशेष्य–सर्वनामपदानां निर्देशः कर्तव्यः। 1

(8) अस्य मानवकल्याणार्थम् एव प्रयोगः करणीयः–अस्मिन् वाक्ये रेखांकित सर्वनामपदस्य स्थाने संज्ञापदस्य प्रयोग कुर्वन्तु। 1

(9) वैज्ञानिकैः उपयोगः विहितः–अत्र कः कर्त्ता ? 1

(10) सर्वत्र विज्ञानस्यैव प्रभावो दृश्यते–अत्रक्रियापदः किम् ? 1

अथवा

शेखावाटी मिशन–100

परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यतें। "सर्वेः स्वार्थं समीहते" इत्यपि कस्यचित् कवेः उक्तिः अस्ति।

स्वार्थाय सर्वेऽपि प्राणिनः जीवन्ति। किन्तु यस्य जीवनम् अन्येभ्यः अस्ति, अपरेषां प्राणिनां सुखाय यः प्रयतते, कष्टं सहते च वस्तुतः तस्यैव जीवनं सार्थकम् अस्ति। पश्य गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति अतः जनाः "मातर" इति वदन्ति। नदी अपि स्वजल सर्वेभ्यः वितरन्ति। पुष्पाणि सर्वेभ्यः सुगन्धं वितरन्ति वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति। मातृसमा उपकारिणी का विद्यते जगति ? अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवन मेव वरम्।

प्रश्नाः–

(1) अस्य गद्यांशस्य समुचित शीर्षकं लिखत। 1

(2) सर्वे के समीहन्ते ? 1

(3) नदी किं न पिबति ? 1

(4) किं वरं विद्यते ? 1

(5) किन्नाम परोपकारः ? 1

(6) कः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति ? 1

(7) "वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति"। अत्र कर्तृपदं किम् ? लिखत। 1

(8) स्वार्थाय सर्वेऽपि जीवन्ति।" अत्र सर्वनामेपदं किम्? 1

(9) "मातृसमा उपकारिणी का विद्यते ?" अत्र विशेषणपदं किम् ? लिखत। 1

(10) अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्। अत्र विशेष्यपदं किम् ? लिखत। 1

खण्ड 'य'

प्र. 25 भवान् रा. आ. उ. मा. विद्यालय कंचनपुरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः सोमनाथः अस्ति। स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्य आवश्यक कार्यवशात् पञ्चदिनस्य अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रं लिखत– 6

अथवा

भवान् रमेशः स्वकीयं पितंर प्रति स्वाध्यायविषये अधोलिखितपत्रं मञ्जूषापदसहायतया पूरयित्वा लिखत–

(सम्यक्, अस्माकम्, भ्रशम्, विहाय, सादरम्, अन्यत्, न्यूनताम्, मातरम्)

जामनगरतः

दिनांकः 21.02.2021

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु

(1) .... प्रणतयः सन्तु। भवतां पत्रमधिगतम्। समाचारान् अधीत्ये मे मनः (2) .... मोदतेतराम्। मईमासे (3) .... परीक्षा सम्पत्स्यते। सम्प्रति अध्यमनकर्म (4) .... चलति। संस्कृत व्याकरणं (5) .... सर्वेषु विषयेषु दक्षतामापन्नोऽस्मिं व्याकरणस्यापि (6) .... शीघ्रमेव अपनेष्यामि (7) .... प्रति मे सादरं प्रणतयः।(8) .... कुशलम्।

भवत्कः सुतः

रमेशः

प्र. 26 मंजूषायाः उचितपदैः "वसतिस्वच्छता" इति विषये संवादं पूरयत। 6

(नलीनां, सुन्दर, स्वच्छता, कदा, श्वः, वामतः, आरभ्य, त्वं)

महेशः– निरञ्जन! (1) .... रविवासरः, तव का योजना वर्तते।

निरञ्जनः– अरे (2) .... न जानासि? रविवासरे सर्वेमिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेशः– अहो! उत्तमः विचारः। सर्वेः श्वः (3) .... गम्यते ?

निरञ्जनः– प्रातः अष्टवादनाद् (4) .... कार्यमिदं भविष्यति।

महेशः– पूर्वं कस्य भागस्य (5) .... करिष्यते ?

निरञ्जनः– (6) ....विद्यामानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

महेशः– तेन तद् रमणीयम् (7) '......... च भविष्यति।

निरञ्जनः– (8) स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव।

अथवा

मंजूषायाः उपयुक्तपदानि, गृहीत्वा चिकित्सालय दर्शनम् इति विषये संवादं पूरयत–

(तत्, त्वम, पीड़ित, कुत्र, उपचारम्, के, अस्ति, चिकित्सालयभवम्)

पुनीतः– सुरेश! त्वं.......... गच्छति ?

सुरेशः– पुनीत! .'.......... अपि आगच्छ ?

पुनीतः– अरे! .... किं भवनम् अस्ति ?

सुरेशः– तत्............ अस्ति! आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः।

पुनीतः– सः केन रोगेण .... अस्ति ?

सुरेशः– सः उच्चरक्तचापेन पीड़ितः ....?

पुनीतः– ते श्वेतप्रवारक धारकाः .... सन्ति ? ते किं कुर्वन्ति ?

सुरेशः– ते चिकित्सकाः सन्ति। ते .... कुर्वन्ति।

प्र. 27 अधोलिखित वाक्येषु केषांचन षड् वाक्यानां संस्कृत भाषयां अनुवादं कुरुत– 6

(1) कक्षा कक्ष के बाहर शिक्षक है।

(2) मुझे फल अच्छे लगते हैं।

(3) मैं गणित और विज्ञान पढ़ता हूँ।

(4) दस बज गए।

(5) नाटकों में शाकुन्तलम् श्रेष्ठ है।

(6) हमें संस्कृत पढ़नी चाहिए।

(7) बालिका माता के साथ जाती है।

(8) मेरी कक्षा में तीस छात्र हैं।

(9) गुरु को नमस्कार है।

(10) वह पैर से लंगड़ा है।

शेखावाटी मिशन–100

आदर्श प्रश्न पत्र–2
माध्यमिक परीक्षा 2021
कक्षा–10
विषय–संस्कृत

समयः– 03:15 घण्टे (सपाद होरात्रयम्) पूर्णांकः 80

परीक्षार्थिभ्यः सामान्य निर्देशः–

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामांक अनिवार्यतः लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. प्रत्येकस्य प्रश्नस्योतरं उत्तर पुस्तिकायामेव देयम।
4. प्रत्येकस्य प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।
5. प्रश्नानां अंकभाणाणि निम्नानुसाराणि सन्तिः।

खण्ड	प्रश्नों की संख्या	अंक प्रत्येक प्रश्न	कुल अंक भार
खण्ड–अ	1(क से ञ) से 11= 20	1	20
खण्ड–ब	12 से 19 = 8	2	16
खण्ड–स	20 से 25 = 4	4	16
खण्ड–द	24 से 25 = 2	5	10
खण्ड–य	26 से 28 = 3	6	18

खण्ड–अ

प्रश्न 1. अधोलिखित प्रश्नानां उचित क्रमाक्षरं स्व उत्तरपुस्तिकायां लिखतु– (10×1=10)

(क) भारतस्य दक्षिणदिशि स्थितः–
(अ) गंगासागरः (ब) इन्दुसरोवरः (स) विन्ध्याचलः (द) कोऽपि न

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता अस्ति–
(अ) महाकवि माघः (ब) महाकवि भारविः (स) महाकवि कालिदासः (द) महाकवि हर्षः

(ग) जातकर्मसमये कः बालकाय अपराजिता–नामौषधिं ददाति–
(अ) दुष्यन्तः (ब) मारीचः (स) शकुन्तला (द) मार्कण्डेयः

(घ) महाराणा प्रतापस्य राज्यकाले कः मुगलशासकः आसीत्–
(अ) अकबरः (ब) जंहागीर (स) शाहजहां (द) बाबरः

(ड़) बाल्यावस्थायां स्वामिकेशवानन्दस्य नामासीत्–
(अ) वीरु (ब) बीरमा (स) वीरः (द) बिरसा

(च) मूढ़ैः पाषाण खण्डेषु विधीयत–
(अ) अंलकार संज्ञा (ब) स्वर्णसंज्ञा (स) रत्नसंज्ञा (द) कोऽपि न

(छ) किं महत्पापं वर्तते–
(अ) आत्मधनम् (ब) आत्मेच्छा (स) आत्मप्रशंसा (द) आत्महननम्

(ज) ''मरुसौन्दर्यम्'' इति पाठे शरीर विज्ञान– विचक्षणः' इति विशेषणं कस्य कृते प्रयुक्तम्–
(अ) आचार्य–चरकस्य (ब) आचार्य–चार्वाकस्य (स) आचार्य–सुश्रुतस्य (द) आचार्य–वाग्भटस्य

(झ) धर्म्याद हि युद्धात् श्रेयोऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते–
(अ) श्रीमद्भागवतगीतायाम् (ब) रघुवंशे (स) रामायण (द) पुराणेषु

(ञ) कस्य संस्कारस्य अवसरे आचार्यः शिष्यम् उपदिशति–
(अ) केशान्त (ब) चूड़ाकर्म (स) समावर्तन (द) नामकरण

प्रश्न संख्या 2–3 पर्यन्त साख्याम् अंकानां स्थाने संस्कृत पदैः समयम् लिखतु–

प्रश्न 2. मोहनः प्रातः काले (08:15)......................... विद्यालयं गच्छति।

प्रश्न 3. महेशः रात्रौ (09:30)...........................शयनं करोति।

प्रश्न संख्या 4–6 पर्यन्त अधोलिखित रेखांकित शब्दं पुनःशुद्धकृत्वा स्वउत्तरपुस्तिकायां लिखतु–

प्रश्न 4. राजमार्गेण अभितः वृक्षा सन्ति।

प्रश्न 5. साधुः पादात् खञ्जः अस्ति।

प्रश्न 6. बालकम् मोदकाः रोचन्ते।

प्रश्न संख्या 7–8 पर्यन्तं अधोलिखित वाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

प्रश्न 7. सीतया पुस्तकं पठ्यते।

प्रश्न 8. बालकः हसति।

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न संख्या 9–11 पर्यन्तं मंजूषाया प्रदतैः अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा लिखतु–

प्रश्न 9. कार्यस्य...................निर्णयं न करणीयम्। (इव, तत्र, सहसा)

प्रश्न 10. ज्ञानं .... न सुखम्। (विना, मा, एव)

प्रश्न 11. ....संस्कृतं जनभाषा आसीत्। (सहसा, पुरा, उच्चै)

खण्ड–ब

प्रश्न 12. अधोलिखित पदयोः सन्धिं–विच्छेदकृत्वा सन्धेः नामापि लिखतु–

(1) कोऽपि (2) निश्छलः

प्रश्न 13. अधोलिखित पदयोः सन्धिं कृत्वा सन्धेः नामापि लिखतु–

(1) नमः+नमः (2) रामः+च

प्रश्न 14. अधोलिखित पदेषु समस्त पदानां विग्रहम् कृत्वा समासस्य नामापि लिखतु–

(1) प्रत्येकम् (2) यथाशक्ति

प्रश्न 15. अधोलिखित विग्रहपदानां समासं कृत्वा समासस्य नामापि लिखतु–

(1) मक्षिकाणाम् अभावः (2) कृष्णस्य समीपः

प्रश्न–16–17 पर्यन्तं अधोलिखित रेखांकित पदेषु विभक्ति तत् कारणं च लिखतु–

(1) जलं विना जीवनं नास्ति।

(2) सीता गीतया सह पठति।

(3) पिता पुत्राय क्रुध्यति।

(4) हिमालयात् गंगा प्रभवति।

प्रश्न 18. कोष्ठके प्रदत्त प्रकृति प्रत्ययाभ्यां पदं निर्माय वाक्यं पूरयत–

(1) ग्रामं.................. तृणं पश्यति। (गम्+शतृ)

(2) सा .... अस्ति। (बुद्धि+मतुप्)

प्रश्न 19. अधोलिखित वाक्ययोः रेखांकित पदेषु प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथककृत्वा लिखतु।

(1) मनुष्यः सामाजिकः प्राणी अस्ति।

(2) जनकं सेवमानः पुत्रः प्रसन्नः अस्ति।

खण्ड– स

प्रश्न 20. अधोलिखितेषु अष्टसु प्रश्नेषु कतिपयानि चत्वारि प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृत माध्यमेन लिखतु–

(1) ''स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'' इति कथनं कस्य कृते अस्ति?

(2) राजा दुष्यन्तः कस्य आश्रमं प्रविशति?

(3) मेवाड़राज्यस्य कस्मिन् वंशे वीराणां सुदीर्घा परम्परा विद्यते?

(4) स्वामिकेशवानन्दस्य मातापित्रोः नाम किम्?

(5) पृथिवयां कियन्ति रत्नानि? कानि च कानि?

(6) भामाशाहः किम् आदाय प्रतापस्य समीपम् आगच्छति?

(7) मरौ केषु स्फूर्तिः स्फुरन्ती दृश्यते?

(8) 'जाट–प्लेटो' कः कथ्यते?

प्रश्न 21. अधोलिखित गद्यांशस्य सप्रसंग हिन्दी भाषायां अनुवादं करोतु–

प्रतापः– कीदृशस्तावद् विजयः? स्वदेशं परित्यक्तुं समुद्यतः अस्मि।

द्वितीय सर्वदारः– (उत्थाय साञ्जलिः) नहि नहि महाराज! यत्र–यत्र भवान् गमिष्यति, तत्र–तत्र वयम् अपि अनुगमिष्यामः ।

प्रतापः–एवं न वाच्यम्। भवन्तः अत्र स्थित्वा एव मातृभूमेः सेवां कुर्वन्तु।

तृतीय सर्वदारः– नहि भगवन्! अस्माकं सेवाः भवता सह सन्ति।वयं तु भवता सह एव निवत्सयामः।

प्रतापः– यद् रोचते भवद्भयः, कुर्वन्तु। न अंह भवतः। विवशान् करोमि।

अथवा

बालः– जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये।

प्रथमाः– अविनीत किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त, वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

द्वितीयः– एष खलु केसरिणी त्वां लड्घयिष्यति यदि तस्याः पुत्रकं न मुञ्चसि।

बालः– (सस्मितम्) अहो, बलीयः खलु भीतोऽस्मि! (इत्यधरं दर्शयति)

शेखावाटी मिशन–100

प्रश्न 22. अधोलिखित गद्यांशस्य सप्रसंग हिन्दी भाषायां अनुवादं करोतु–

प्रतापस्य राज्यकाले 'अकबर' इति नामकः मुगलशासकः आसीत्। अकबरस्य सेनया सह प्रतापस्य अनेकवारं युद्धम् अभवत्। मुख्ययुद्धं हल्दीघाटीस्थाने अभवत् अतएव एतत् ' हल्दीघाटीयुद्धम्' इति नाम्ना प्रसिद्धमस्ति अस्मिन् युद्धे प्रतापः 'चेतक' इति नामके अश्वे आरुह्य बहुशौर्यं प्रदर्शितवान्। प्रतापस्य सेना पर्वतीय युद्धेषु कुशला आसीत्।

अथवा

मल्लेषु मल्लः सूरजमल्लः शरीर सौष्ठस्य, सौन्दर्यस्य, सरलतायाः, चारित्रिक–दृढ़तायाः, धार्मिकताया वीरतायाः, करूणायाः, त्यागस्य, बलिदानस्य, शरणात–रक्षणस्य, प्रजावात्सल्यस्य, राष्ट्रवादस्य, सर्वपन्थ–समादरस्य च साक्षात् प्रतिमूर्तिरासीत्। सूरजमल्लः स्वकालखण्डस्य अत्यन्तं दुर्धर्षः, अतिशयेन तेजस्वी, नितान्तं नीतिनिपुणः, अद्वितीयश्च योद्धा आसीत्।

प्रश्न 23. अधोलिखित पद्यांधस्य सप्रसंग हिन्दी भाषायां अनुवादं करोतु–

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तदृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।

अथवा

मरुः सुवर्णो न हि येन दृष्टः किं तेन दृष्ट कुहचित् सुदृश्यम्।
स्फुटं मरौ भान्ति सुमेरुश्रृङ्गः कृष्णासु शिलासु न तेहि मृग्याः।।

खण्ड–द

प्रश्न 24 अधोलिखित गद्यांश पठित्वा एतदाधारितं प्रश्नानां उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत–

संस्कृत भाषायाः वैज्ञानिकतां विचार्य एव संगणक विशेषज्ञाः कथयन्ति यत् संस्कृतमेव संगणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा विद्यते। अस्याः वाङ्मयं वेदैः पुराणै, नीतिशास्त्रैः चिकित्साशास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। कालिदास सदृशानां विश्वकवीनां काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्। चाणक्य रचितम् अर्थशास्त्रं जगति प्रसिद्धमस्ति। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमं भास्कराचार्यः सिद्धान्तशिरोमणौ अकरोत्।

प्रश्ना :– (1) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (2) अर्थशास्त्रं केन रचितम्?
(3) कस्य कृते संस्कृतमेव सर्वोत्तमा भाषा विद्यते? (4) केषां कवीनां काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्?
(5) शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमं केन अकरोत्,

अथवा

सतां जनानां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। मानवः यादृशैः जनैः सह वसति तादृशः एव भवति। सज्जनानां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति उन्नतिं महत्पदं च अलंकरोति। दुर्जनानां संगत्या मनुष्यो दुर्जनो भवति, पतनं विनाशं च प्राप्नोति। अतः मनुष्यस्योपरि संगतेः महान् प्रभावो भवति। बाल्यकाले विशेषतो बालकस्योपरि संसर्गस्य प्रभावो भवति। ये यादृशैः बालकैः सह उपविशन्ति, उत्तिष्ठन्ति, खादन्ति, पिबन्ति च ते तथैव स्वभाव धारयन्ति।

प्रश्नाः– (1) अस्य गद्यांशस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत। (2) केषां सम्पर्केण मनुष्यः सज्जनः भवति?
(3) का सत्संगतिः कथ्यते? (4) बाल्यकाले कैः सह संगतिः कदापि न करणीया?
(5) दुर्जनानां संगत्या मनुष्यः किम् प्राप्नोति?

प्रश्न 25. अधोलिखित गद्यांशं पठित्वा एतदाधारितं प्रश्नानाम् उत्तराणि यथा निर्देश लिखत–

मानव–जीवने श्रमस्य महत्त्वं सर्वेजनाः जानन्ति। मानवः श्रममाश्रित्यैव सुख समृद्धिं प्राप्नोति। जनः सुखं वाञ्छति, मनोरथं पूरयितुमभिलषति, जीवने समुन्नतिं कांक्षते, तत्सर्वस्य साधनं श्रममेव वर्तते। श्रम एव मानवस्य स्वाभिमानं शारीरिक–शक्तिं च प्रसारयति, सर्वेषु कार्येषु तस्य दक्षतामापादयति। अतएव श्रमेणैव सर्वत्र साफल्यं मिलति। जनैः सदा सः श्रमः कर्त्तव्यः यतः सम्पत्तेरूद्भवो भवति, यतोहि व्यर्थं परिश्रमं कुर्वन् नरः पपाभाक् भवति।

प्रश्नाः– (1) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (2) मानवजीवने कस्य महत्त्वं सर्वे जनाः जानन्ति?
(3) केनैव सर्वत्र साफल्यं मिलति? (4) मानवः कथं सुखसमृद्धिं प्राप्नोति?
(5) श्रम एव मानवस्य किम् प्रसारयति?

अथवा

अस्मिन् संसारे असंख्याः भाषाः सन्ति। तासु भाषासु संस्कृत भाषा सर्वोत्तमा विद्यते। संस्कृता परिष्कृता दोषरहिता भाषा एव संस्कृत भाषा कथ्यते। इयमेव भाषा देवभाषा, गर्वाणगीः, सुरवाणी इत्यादिभिः शब्दै संबोध्यते एतानि नामानि एव अस्याः भाषायाः महत्त्वं सूचयन्ति। संस्कृतभाषा जगतः सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति। सर्वभाषाणां मूलरूप ज्ञानाय एतस्या आवश्यकता भवति।

प्रश्नाः– (1) अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। (2) सर्वोत्तमा भाषा का विद्यते?
(3) सर्वभाषाणां मूलरूपं ज्ञानाय कस्याः आवश्यकता भवति? (4) कीदृशी भाषा संस्कृत भाषा कथ्यते?
(5) संस्कृत भाषा कैः शब्दैः संबोध्यते?

शेखावाटी मिशन–100

खण्ड–य

प्रश्न 26. भवान् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुरस्य दशम्याः कक्षायाः छात्र रमेशः अस्ति। स्वविद्यालयस्य प्रधानाचार्य आवश्यक कार्यवशात् पंचदिनस्य अवकाशार्थ प्रार्थनापत्रं लिखत।

अथवा

भवान् गोविन्दः। स्वकीयं मित्रं राजेन्द्रं प्रति स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सव विषये अधोलिखित पत्रं मंजूषापदसहायतया पूरयित्वा लिखतु।

परिवारे, वार्षिकोत्सवस्य, पत्रोत्तरं, स्वकरकमलेन, कुशलताम्, विविधाः, स्वीकृतवान्, पुरस्कारम्।

शैलपुरतः
दिनांकः 21.05.2021

प्रियमित्रं राजेन्द्र
नमस्ते।

अत्र अहं कुशलं भवतः .... कामये। फरवरी मासे पन्चमे दिनांके मम विद्यालये .... आयोजनम् अभवत्। अस्मिन् दिवसे .... प्रतियोगिताः अभवन्। अहमपि धावन प्रतियोगितायां, वाद–विवाद प्रतियोगितायां च भाग .... पुरस्कार वितरण समारोहे अस्माकं क्षेत्रस्य विधायक महोदयः .... पुरस्कार वितरणं कृतवान। अहमपि .... प्राप्तवान्। अस्तु .... सर्वेभ्यः यथायोग्यं नमस्काराः ......शीघ्रमेव प्रेषणीयम्।

भवतः मित्रम्
गोविन्दः

प्रश्न 27. मंजूषातः उचितानि पदानि चित्वा द्वयोः सख्योः संवादं पूरयतः–

स्थानान्तरणवशात्, कक्षायाम्, तव, विद्यालयात्, वससि, आगता, अहं, नवमकक्षा

मेघाः– स्वागतं ते अस्यां ....।
सुधाः– धन्यवादाः!
मेघाः– प्रियसखि! किं .... नाम?
सुधाः– मम नामसुधा अस्ति।
मेघाः– सुधे! कस्मात् ....आगता असि?
सुधाः– अहं जयपुर नगरस्य केन्द्रीय विद्यालयात् आगता अस्मि।
मेघाः– अहमपि .... पर्यन्तं तत्रैव अपठम्। पितुः ....अत्र आगता।
सुधाः– अहमपि अनेनैव कारणेन अत्र ....।
मेघाः– अधुना त्वं कुत्र ....?
सुधाः– अधुना .... जवाहरनगरे वसामि।

अथवा

गन्तुम्, अस्य, तुभ्यं धूम्रपानं, स्वास्थ्य, प्रेरणीयाः मया, दुर्व्यसनस्य

सोहनः– गुरूवर! अहं पश्यामि विद्यालये केचन छात्रा...............कुर्वन्ति?
गुरूः– वत्स! धूम्रपनं........................विनाशकमस्ति।
सोहनः– गुरूवरं! कोऽस्य...................... निवारणोपायः?
गुरूः– पुत्र! जन–जागर्तिरेव........................ दुर्व्यसनस्य निवारणोपायः।
सोहनः– गुरूवर! ....किं करणीयम्?
गुरूः– त्वया छात्राः .... यत् अस्माभिः धूम्रपानं न करणीयम्।
सोहनः– गुरूवर! एवमेव करोमि। अधुना अहं .... इच्छामि।
गुरूः– वत्स! महत्त्वपूर्ण विषयोपरि वार्ता कर्तुं.......................... धन्यवादं ददामि।

प्रश्न 28. अधोलिखित वाक्येषु केषांचन षड्वाक्यानां संस्कृतभाषायां अनुवादं कुरुत –

(1) हिमालय से गंगा निकलती है।
(2) मुझे फल अच्छे लगते हैं।
(3) माता पुत्र को उपदेश देती है।
(4) विद्या विनम्रता प्रदान करती है।
(5) सज्जन दुर्जनों से डरते हैं।
(6) सोहन घोड़ से गिर पड़ा।
(7) पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है।
(8) रमेश मोहन के साथ विद्यालय जाता है।
(9) मैं कल यहाँ आऊँगा।
(10) कृष्ण के चारों ओर बालक हैं।
(11) मेरी कक्षा में 30 छात्र हैं।
(12) राजेश महेश का मित्र है।

ALLEN CAREER INSTITUTE
KOTA (RAJASTHAN)
path to success
SIKAR, RAJASTHAN

सपने होंगे सच

Pre-Nurture & Career Foundation Division

Class 6th to 10th | NTSE | OLYMPIADS & BOARD

Admission Open

Session 2021-22

New Batches for

Class 6th to 10th

7 April & 12 May 2021

(*ENGLISH MEDIUM*)

Strong Foundation Leads to

EXTRAORDINARY RESULTS

ALLEN SIKAR

Classroom Students

Qualified for

INMO

Indian National Mathematical Olympiad

&

INJSO

Indian National Junior Science Olympiad

(Conducted by HBCSE)

KRISH GUPTA
Class: 10th

DINESH BENIWAL
Class: 10th

HIMANSHU THALOR
Class: 9th

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Adv.) 2020

प्रथम वर्ष में ही JEE (Adv.) का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

AIR
736

AIR
836

SUBHASH
Classroom Student

KULDEEP SINGH CHOUHAN
Classroom Student

ALLEN® SIKAR Result : JEE (Main) 2021 (Feb. Attempt)

दो साल बेमिसाल

एलन सीकर ने गढ़े कीर्तिमान,
जेईई-मेन में दिए
शेखावाटी टॉपर्स

MATHEMATICS
100
PERCENTILE

शेखावाटी
टॉपर

शेखावाटी
गर्ल्स टॉपर

ROHIT KUMAR
Classroom
99.9892474 %tile

SAKSHI GUPTA
Classroom
99.8925637 %tile

ALLEN® SIKAR Result : NEET (UG) 2020

प्रथम वर्ष में एलन सीकर, क्लासरूम के 165 + विद्यार्थियों को मिला सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रवेश

680/720
AIR 695
AIIMS Jodhpur

675/720
AIR 866
AIIMS Jodhpur

LAVPREET KAUR GILL
Classroom Student

AYUSH SHARMA
Classroom Student

- Lady Hardinge Medical College, Delhi — **SARVANISHTHA**
- All India Institute Of Medical Sciences, Jodhpur — **RAHUL BHINCHAR**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **JITENDRA P.S. RATHORE**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **AYUSH CHOUDHARY**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **RAVEENA CHOUDHARY**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **AAKANKSHA CHAUDHARY**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **RAMPRATAP CHOUDHARY**

- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **PRACHI RAJPUROHIT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **NIKITA**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **DAYANAND JYANI**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **ANNU**
- Swai Man Singh Medical College, Jaipur — **DEEPIKA GOENKA**
- Rajasthan University Of Health Sciences, Jaipur — **OM PRAKASH JAT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **PRAVEEN KUMAR YADAV**

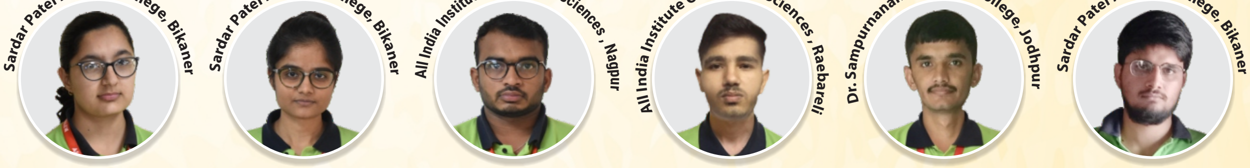

- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **ADITI**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **MANASVI JANGIR**
- All India Institute Of Medical Sciences, Nagpur — **SANJAY SAIN**
- All India Institute Of Medical Sciences, Raebareli — **SUMIT CHOUDHARY**
- Dr. Sampurnanand Medical College, Jodhpur — **ANKIT**
- Sardar Patel Medical College, Bikaner — **HEMANT DHAYAL**

UPCOMING NEW BATCHES for JEE (Main+Adv.) & NEET (UG)

(Hindi & English Medium)

NURTURE BATCH	ENTHUSIAST BATCH	LEADER BATCH
(For Class 10th to 11th Moving Students)	(For Class 11th to 12th Moving Students)	(For Class 12th Appeared / Pass Students)
Starting from	Starting from	Starting from
2, 9, 16 June & 30 June 2021	**7 April 2021** Both 11th & 12th syllabus will be covered	**2 June & 16 June 2021**

ALLEN® SIKAR

TEAM ALLEN @ SIKAR

एलन स्कॉलरशिप एडमिशन टेस्ट
(ASAT)

04, 11, 25 अप्रैल 2021 | 09, 23, 30 मई 2021,
06, 13, 20, 27 जून 2021

90% तक स्कॉलरशिप

ALLEN® CAREER INSTITUTE KOTA (RAJASTHAN)
path to success

DOWNLOAD FREE SAMPLE PAPERS

ALLEN Sikar Center: "SANSKAR," Near Piprali Circle, Sikar-Jhunjhunu Bypass, Piprali Road, Samrathpura, Sikar
Tel.: 01572-262400 | **E-mail** : sikar@allen.ac.in

Corporate Office : "SANKALP", CP-6, Indra Vihar, Kota (Raj.) INDIA, 324005
Tel.: 0744-2757575 | **Email:** info@allen.ac.in | **Web:** www.allen.ac.in

ALLEN Info & Admission App
Download from Google play

www.allen.ac.in/sikar | facebook.com/allensikar | twitter.com/allensikar | youtube.com/allencareerinstitute